Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित
प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष- 42 अंक-13
कल्पादि सम्वत् 1972949118

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 13 जून से 19 जून 2018 तक
द्वि.ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या से द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी 2075 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

गीता में मानव ... पृष्ठ- 2
जल रहा है कश्मीर... पृष्ठ- 3
डायबिटीज के होने.. पृष्ठ- 4
अवधपुरी यह चरित... पृष्ठ- 8
इतिहास से छेड़खानी.... पृष्ठ- 12

- अपने भविष्य को लेकर परेशान है देश का भविष्य
- गोसेवा से सब कुछ प्राप्त हो सकता है
- पाकिस्तानी विधुत की नई फाल्टलाईन
- बूढ़े शेखों के लिए सज रहे हैं मासूम हिन्दुस्तानी लड़कियों के बाजार

सुरंग के रास्ते घुसपैठ में कामयाब हुए आतंकी!
सीमापार घुसपैठ बंद हो–हिन्दू महासभा

• संवाददाता •

सरहद पर बीएसएफ के चौकस जवानों को चकमा देकर घुसपैठ करने के लिए आतंकी सुरंगों का सहारा ले रहे हैं। बीते दिनों कुछ आतंकी जम्मू और कश्मीर में भारत–पाक सीमा पर लगी फैंसिंग के नीचे सुरंग खोदकर घुसपैठ करने में कामयाब रहे हैं। सुरंगों के रास्ते घुसपैठ की संभावनाओं को बार्डर सिक्योरिटी फोर्स बीएसएफ के महानिदेशक केके शर्मा ने भी स्वीकार किया है। जम्मू के हीरा नगर इलाके के मंगुचक पोस्ट से रात हुई घुसपैठ की कोशिश के बाद बीएसएफ महानिदेशक ने कहा है कि कुछ दिन पहले कुछ आतंकवादी एक सुरंग के माध्यम से भारत में घुसपैठ कर गए। पाकिस्तान में अभी भी कई ऐसे लांचिंग शेष पृष्ठ 11 पर

भारत और अमेरिका मिलकर करेंगे आतंकवाद का खात्मा
विश्व समुदाय मिलकर करे आंतकवाद का सफाया

• संवाददाता •

पेंटागन के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि भारत को बड़ा रक्षा साझेदार घोषित करने से परस्पर सहयोग के रास्ते खुलते हैं क्योंकि भारत और अमेरिका के नौवहन सुरक्षाए डोमेन संबंधी जागरूकता और आतंकवाद से निपटने जैसे कई मुद्दों पर साझा हित हैं। अमेरिका ने वर्ष २०१६ में भारत को बड़े रक्षा साझीदार के रूप में मान्यता दी थी।

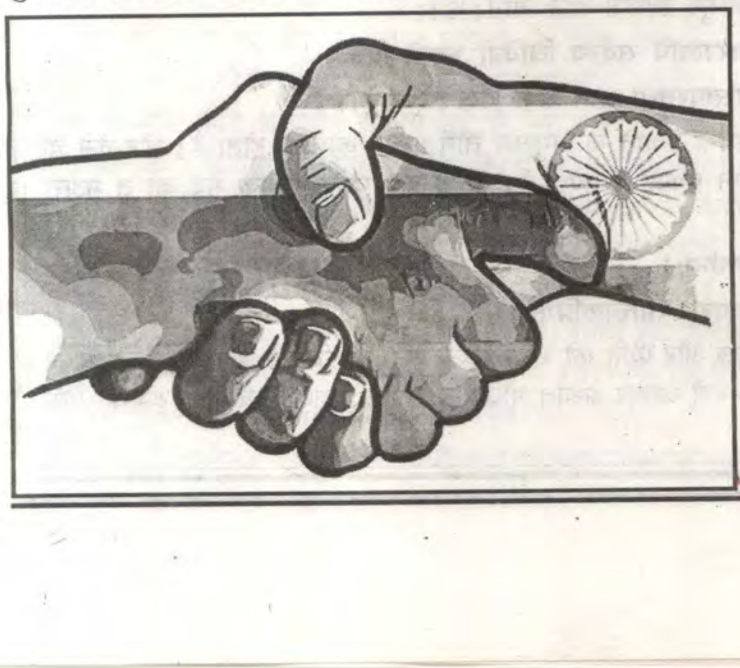

यह दर्जा मिलने के बाद भारत, अमेरिका से अत्याधुनिक और संवेदनशील प्रौद्योगिकियां खरीद सकता है। रक्षा, एशिया और प्रशांत सुरक्षा मामलों के सहायक मंत्री रैंडल श्राइवर ने सीनेट की विदेश संबंधों की समिति की एक उपसमिति के समक्ष कहा कि भारत और अमेरिका राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा मामलों में सहज साझेदार हैं। उन्होंने कहा अमेरिका ने वर्ष २०१६ में भारत को बड़ा रक्षा साझेदार घोषित किया था जो रक्षा मामलों खासतौर से रक्षा व्यापार और तकनीक पर सहयोग बढ़ाने के रास्ते खोलता है। उन्होंने कहा कि वैश्विक स्थिरता और नियम आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के लिए समर्थन की साझा इच्छा के साथ भारत और अमेरिका के नौवहन सुरक्षा, डोमेन संबंधी जागरूकता, आतंकवाद विरोध, मानवीय सहायता और प्राकृतिक आपदाओं तथा अंतराष्ट्रीय खतरों की समन्वित प्रतिक्रिया देने पर साझा हित हैं। इससे पहले अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा था कि भारत, रूस और चीन जैसे देशों के साथ काम करना अच्छी बात है ना कि बुरी। वह रूस के साथ संबंध सुधारने की अपनी इच्छा को लेकर हो रही आलोचना पर प्रतिक्रिया दे रहे थे। उन्होंने नार्वे के प्रधानमंत्री एर्ना सोलबर्ग के साथ व्हाइट हाउस में संयुक्त रूप से संवाददाता सम्मेलन के संबोधित करते हुए कहा रूस या चीन या भारत या किसी शेष पृष्ठ 11 पर

गीता में मानव जीवन की सार्थकता

वाचस्पति पं. श्री त्रिलोक मोहन जी

सनातन देश भारत की धार्मिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक उन्नति का विकसित रूप दर्शाने वाले दो महान ग्रन्थ श्रीमद्रामायण एवं श्रीमहाभारत हैं। यह बात निर्विवाद है कि इन दोनों ग्रन्थों ने सदियों से जन मानस को प्रभावित किया है तथा जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये मानव को त्याग एवं तपस्या के मार्ग को अपनाने की प्रेरणा दी है। श्रीमद्रामायण में सर्वगुण निधान धर्म के साक्षात् विग्रह भगवान श्रीराम के पवित्र चरित्र का वर्णन किया गया है, जिसका अनुकरण करके अनेकानेक मनुष्यों ने जीवन की सार्थकता प्राप्त की है। श्रीमहाभारत के भीष्मपर्वान्तर्गत भगवान श्रीकृष्ण के मुखारबिन्द से निःसृत सर्वकल्याणकारी गीतोपदेश है, जिसकी अलौकिकता ने भारत ही नहीं अपितु विश्वभर के विद्वानों, दार्शनिकों एवं बुद्धिजीवियों को आकर्षित किया है और उन्होंने मातेश्वरी गीता की शरण ग्रहण करने में अपना सौभाग्य माना। सनातन धर्मानुसार मानव जीवन का लक्ष्य त्यागपूर्वक भोग करते हुए भगवान के मंगलमय नाम आदि के आश्रित होकर जन्म मरण के महान दुःख से छूटकर मोक्ष प्राप्ति है। इसके लिये शास्त्रों ने कर्म–उपासना–ज्ञान आदि मार्गों का आश्रय लेने का आदेश दिया है। इसके लिये शास्त्रों ने कर्म–उपासना–ज्ञान आदि मार्गो का आश्रय लेने का आदेश दिया है। उपनिषद तत्त्वज्ञान का प्रतिपादन करते हैं और कहीं कहीं साधना का भेद प्रकट होता है। परन्तु गीतोपदेश की विशेषता यह है कि इसमें भगवान ने कर्म–उपासना–ज्ञान तथा अन्य मार्गों के समन्वय का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है तथा मत भेद के लिये कोई कोई स्थान न रखकर अर्जुन के माध्यम से मानव को दिव्यामृत का पान करवाकर धन्य कर दिया है।

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपाल नन्दनः।
पार्थोवत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।।

सब उपनिषद गौ हैं, श्रीकृष्ण दुहने वाले हैं, बुद्धिमान अर्जुन उस गौ के दूध का भौकता–बछड़ा है, और जो दूध दुहा गया वही मधुर गीतामृत है। गीतोपदेश का स्थान कुरुक्षेत्र की पावन रणभूमि है। संसार में अनेक युद्धों में अपने पराक्रम का कौशल प्रदर्शित करके शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाले महान वीर अर्जुन इस रणभूमि में युद्ध मे लिये तत्पर अपने पितामह, गुरु, आचार्य एवं सम्बन्धियों को देख मोहग्रस्तं हो गये, अत्यन्त खिन्न मन के साथ उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण के सन्मुख निवेदन किया–

दृष्टवेमं स्वजनं .... रोमहर्षश्च जायते।

हे कृष्ण! इस युद्ध की इच्छा वाले खड़े हुए स्वजन समुदाय को देखकर मेरे अंग शिथिल हुए जाते हैं और मुख भी सूख जाता है और मेरे शरीर में कम्पन तथा रोमांच होता है। वास्तविकता यह है कि अर्जुन आज इसलिये युद्ध नहीं करना चाहता क्योंकि सामने पूज्य एवं प्रियजन हैं, जिनके वध से वह पाप का भागी बनेगा। क्षत्रिय पुत्र ने अपने स्वधर्म का परित्याग करते हुए कह दिया–

न कांक्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च।
किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा।।

हे कृष्ण! मैं विजय को नहीं चाहता और राज्य तथा सुखों को भी नहीं चाहता। हे गोविन्द, हमें राज्य से क्या प्रयोजन है अथवा भोगों से और जीवन से भी क्या प्रयोजन है? बन्धुओं के वध के पाप के भय से दुःखी एवं आंसू बहाते हुए रण बिमुख अर्जुन का भगवान ने स्वधर्म (क्षत्रिय) के पालन की चर्चा करते हुए इस प्रकार की कायरता की वृत्ति के परित्याग की प्रेरणा दी, क्योंकि युद्ध विमुखता के फलस्वरूप तो उसे अपकीर्ति का ही भागी बनना पड़ेगा। परन्तु अर्जुन तो इतना कम्पित है कि युद्ध न करके भिक्षा मांग कर ही जीवन का निर्वाह करना चाहता है। मन की अत्यन्त मोह तथा भ्रान्ति से युक्त दशा में अर्जुन ने भगवान के चरणों में ठीक मार्ग बताने की प्रार्थना की।

कार्पण्य दोषो .... त्वां प्रपन्नं।।

इसलिये कायरता रूप दोष करके अपहृत हुए स्वभाव वाला और धर्मके विषय में मोहित चित्त हुआ मैं आपको पूछता हूं, जो कुछ निश्चय किया हुआ कल्याणकारक साध न हो वह मेरे लिये कहिये, क्योंकि मैं आपका शिष्य हूं इसलिये आपकी शेष पृष्ठ 11 पर

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस समय आप–अपने आस–पास के लोगों पर अत्यधिक विश्वास न करें अन्यथा धोखा खा सकते है। पिता व पुत्र में चला आ रहा वैचारिक मतभेद शीघ्र ही समाप्त हो जायेगा। परिवर्तन ही संसार का नियम है।

वृष : यह सप्ताह आपके लिये आर्थिक रूप से उतार–चढ़ाव भरा रहेगा। जोखिम पूर्ण कार्य करने में सफलता प्राप्त होगी परन्तु अपने क्रोध पर नियन्त्रण बनाये रखें। महिलायें निराश न हो क्योंकि आपकी सोच ही सफलता का कारण बनेगी।

मिथुन : इस सप्ताह कुछ लोगों की वाणी में गजब का आकर्षण आयेगा जिससे आपकी शासन व प्रशासन में गहरी पैठ बनेंगी। जीवनोपयोगी वस्तुओं की खरीददारी करने का अवसर प्राप्त होगा। आर्थिक प्रयास फलीभूत होंगे। छात्र जोखिम भरे कार्यो को करने से बचें।

कर्क : सप्ताह के शुरुआत में कुछ दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है, उसके पश्चात स्थितियां अनुकूल हो जायेंगी। कुछ लोगों का राजकीय कार्यो में फंसा हुआ रूपया मिलने की सम्भावना है। महिलाओं को परिवार की ओर से सुख व सहयोग प्राप्त होगा।

सिंह : किसी को भी झूठे आश्वासन न दें, ये आदत त्याग देने पर जीवन में बहुत लाभ होगा। आप–अपने परिवार के प्रति विशेष ध्यान दें तभी आप मानसिक रूप से स्वस्थ रह पायेंगे। दमा व रक्त रोगियों को कुछ दिक्कत महसूस होगी।

कन्या : इस सप्ताह आपके कुछ रूके हुये कार्यों में प्रगति होने के आसार हैं। परिवार में किसी नये मेहमान का आगमन होने के संकेत हैं जिससे परिवार में खुशहाली का माहौल रहेगा। शारीरिक व मानसिक उर्जा से परिपूर्ण यह सप्ताह नई दिशायें दिखायेगा।

तुला : आप बहुत स्पष्ट न बोलें चूंकि इससे आपके अपने ही शत्रु बन सकते हैं। जिस भी लक्ष्य को साधें जब तक उसका भेदन न कर लें तब–तक विश्राम न करें। इस सप्ताह आप किसी वाद–विवाद में पड़ने की कोशिश न करें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है।

वृश्चिक : इस सप्ताह आप उदार स्वभाव न रखें क्योंकि इससे आप ठगे जा सकतें है। कानून व नियम का पालन करें तथा अपने हितों के लिये अनुशासन न तोड़ें। महिलायें अपने कर्तव्यों को लेकर चिन्तित रहेगी। सोंची–समझी रणनीति के तहत लिये गये फैसले फलीभूत होंगे।

धनु : इस सप्ताह कुछ लोगों की पुरानी समस्याओं का समाधान होगा तथा आपके मन में नये विचार उत्पन्न होंगे जिससें आप में सकारात्मक सोच का विकास होगा। सुन्दरता के प्रति आकर्षण हितकारी नहीं है। शारीरिक उर्जा में कमी के कारण थकान महसूस होगी।

मकर : इस समय कुछ लोगों को अपनी प्रतिभा पहचानने की आवश्यकता है। राय–मशविरा लेकर किये गये कार्य सफल होंगे। सन्तान के प्रति मन उदासीन रह सकता है। अपने आस–पास के लोगों से मैत्रै भाव बनायें रखने की जरूरत है।

कुम्भ : यह सप्ताह कुछ लोगों के लिये आर्थिक रूप से लाभदायक प्रतीत होगा। कुछ नैतिक कार्यो में धन का व्यय करना पड़ सकता है। समाज में प्रतिष्ठा बरकरार रखने के लिये अहंकार को त्यागना पड़ सकता है। अपने कार्य के लिये विज्ञापन दें तो लाभ अवश्य होगा।

मीन : इस सप्ताह आप कोई भी जोखिम भरा कार्य न करें अन्यथा हानि उठानी पड़ सकती है। मित्रों से आधिक हास–परिहास न करें वरना रिश्तों में खटास आ सकती है। महिलायें क्रोध न करें, शान्त रहें तो अनेक संकटो से आप बच सकते हैं।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः।
दम्भाहडकारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः।।

जो मनुष्य शास्त्रविधि से रहित केवल मनःकल्पित घोर तप को तपते हैं तथा दम्भ और अहकार से युक्त एवं कामना, आसक्ति और बल के अभिमान से भी युक्त हैं।।५।।

कर्शयन्तः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः।
मां चैवान्तःशरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्रयान्।।

जो शरीर रूप से स्थित भूतसमुदाय को और अन्तःकरण में स्थित मुझ परमात्मा को भी कृश करने वाले हैं, उन अज्ञानियों को तू आसुर स्वभाव वाले जान।।६।।

आहारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रियः।
यज्ञस्तपस्तथा दानं तेषां भेदमिमं श्रृणु।।

भोजन भी सबको अपनी–अपनी प्रकृति के अनुसार तीन प्रकार का प्रिय होता है। और वैसे ही यज्ञ, तप और दान भी तीन–तीन प्रकार के होते हैं। उनके इस पृथक्–पृथक् भेद को तू मुझसे सुन।।७।।

आयुः सत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः।।

आयु, बुद्धि, बल, आरोग्य, सुख और प्रीति को बढ़ाने वाले, रसयुक्त, चिकने और स्थिर रहने वाले तथा स्वभाव से ही मन को प्रिय–ऐसे आहार अर्थात् भोजन करने के पदार्थ सात्त्विक पुरुष को प्रिय होते हैं।।८।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 13 जून से 19 जून 2018 तक

अध्यक्षीय

जल रहा है कश्मीर

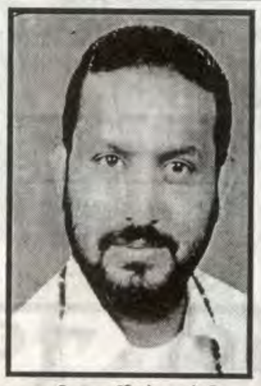

जब कश्मीर जल रहा था, तब मोदी किसी चुनावी रैली में भाषण दे रहे थे। आज से कुछ सदियों बाद जब भारत का इतिहास लिखा जाएगा। तो शायद ऐसा कोई वाक्य लिखा जाएगा। रोम को जलते हुए देखने वाले अब नहीं हैं, लेकिन कश्मीर को तो हम जलता, झुलसता देख रहे हैं। इतिहास रचने को बेताब प्रधानमंत्री मोदी अपना नाम नीरो की तरह दर्ज कराना चाहते हों, तो यह उनकी मर्जी है। लेकिन उनकी मर्जी का खामियाजा पूरा देश क्यों उठाए। आज कश्मीर में जैसे हालात हैं, वैसे कभी नहीं हुए। आतंकवाद तो वहां बीते ३ साढ़े ३ दशकों से है, पर इसमें आम कश्मीरी कभी संदेह के दायरे में नहीं आया था। बंदूकों और बमों के साथ–साथ पत्थर आतंक का पर्याय कब और कैसे बन गए, इस पर गंभीरता से विचार करने का वक्त आ गया है। हम जम्मू–कश्मीर को भारत का अभिन्न राज्य मानने के खोखले वाक्य से आगे ही नहीं बढ़ रहे हैं। जबकि जरूरत है कि वहां के जख्मों की टीस महसूस की जाए। यह सरकार की असफलता का नतीजा है कि वहां के नौजवानों के हाथों में पत्थर हैं और उसके निशाने पर सुरक्षा बल ही नहीं आम नागरिक भी आ गए हैं। कुछ दिनों पहले पत्थरबाजों ने एक स्कूल बस पर पत्थर मारे थे, जिसमें मासूम बच्चे सवार थे। बीते सोमवार पत्थरबाजों ने पर्यटकों की एक बस पर हमला कर दिया, जिसमें चेन्नई के एक पर्यटक की मौत हो गई। कुछ दिन पहले भी पत्थरबाजों के हमले में करीब आधा दर्जन पर्यटक घायल हुए थे। हमारी सरकार इस मामले में क्या कर रही है, यह तो मन की बात में भी स्पष्ट नहीं कर रही है। जम्मू–कश्मीर की अर्थव्यवस्था की रीढ़ पर्यटन ही है। अगर इस कारोबार को भी आतंकवाद की भेंट चढ़ा दिया जाएगा, तो बहुत गंभीर स्थिति खड़ी हो जाएगी। दिक्कत यह है कि जम्मू–कश्मीर की नासूर बनती जा रही समस्या के इलाज के लिए भाजपा सरकार के पास कोई विचार, योजना या दूर दृष्टि ही नहीं है। उसके पास केवल भावनाओं को भुनाने वाले मुद्दे हैं। जम्मू–कश्मीर में आतंकवाद घरों की दहलीज पर कब और कैसे दस्तक देने लगा, नौजवानों को पत्थर या बंदूक उठाने पर मजबूर क्यों होना पड़ा। क्यों उनके मां–बाप अपने बच्चों को मौत के रास्ते पर बढ़ने दे रहे हैं। किसी आतंकी की मौत की खबर को कुछ चैनलों में ग्लैमराइज करके दिखाने के पीछे कौन सा एजेंडा काम कर रहा है। कश्मीर के कुछेक बच्चे क्रिकेट में या सिविल सविर्सेस में सफल होते हैं, तो क्या इससे बाकी बच्चों का भविष्य भी संवर जाता है। नयी पीढ़ी के लिए शिक्षा और रोजगार के बेहतरीन अवसर जुटाने की क्या योजना केंद्र सरकार के पास है। आप पाकिस्तान पर इल्जाम लगाते हैं कि वह यहां आतंकवाद का प्रायोजक है, तो क्या आप इतने कमजोर हैं पाकिस्तान के आगे लगातार बेबस साबित हो रहे हैं। अपनी शक्ति प्रदर्शन के लिए आप तमाम तरह के सशस्त्र बल वहां बढ़ा रहे हैं, लेकिन फिर भी युद्ध काल से ज्यादा जवान जम्मू–कश्मीर में हताहत हुए हैं। उनके साथ–साथ आम नागरिक भी मारे गए हैं। ये तमाम सवाल हैं, जिन पर केंद्र सरकार को, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को देश के सामने जवाब देना चाहिए। चार सालों में उनकी कश्मीर नीति असफल साबित हुई है, यह नजर आ रहा है। लेकिन वे अपनी कमजोरी शायद ही स्वीकार करें। कश्मीर समस्या का समाधान बातचीत से होगा, राजनीतिक पहल से होगा, इस नाम पर पिछले साल अक्टूबर में मोदी सरकार ने आईबी के पूर्व निदेशक और कश्मीर में काम कर चुके दिनेश्वर शर्मा को वार्तालाप बनाने का फैसला किया था। उनकी सबसे बड़ी प्राथमिकता और चुनौती यहां के युवाओं को डीरेडिकलाइज कर, घाटी को भारत का सीरिया बनने से रोकना है। कश्मीर बड़ी तेजी से सीरिया बनता जा रहा है, क्या मोदीजी अब आम चुनावों में ही इस पर कुछ बोलेंगे।

राष्ट्रीय उद्बोधन

चन्द्र प्रकाश कौशिक

राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

अपने भविष्य को लेकर परेशान है देश का भविष्य

कुछ दिन पहले बिहार के मुंगेर जिले से एक चौंकाने वाली खबर आयी कि रेलवे में नौकरी के लिए बेटे ने अपने पिता की हत्या की सुपारी दे दी। खबर बहुत सुर्खियों में नहीं आ सकी, इसलिए बहुत लोगों का ध्यान इस ओर नहीं गया। रेलवे कर्मचारी को गोली मारकर हत्या के प्रयास में एक दिन बाद पुलिस ने आरोपी बेटे को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के अनुसार बेटे ने ही अपने पिता की हत्या की योजना बनायी थी। बेटा पिता की जगह रेलवे में नौकरी पाना चाहता था। वह कई वर्षों से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहा था, लेकिन कामयाबी नहीं मिल पा रही थी। उसके पिता ३० अप्रैल को रिटायर हो रहे थे, इसलिए उसने पिता की हत्या की योजना बनायी। ताकि अनुकंपा के आधार पर उसे रेलवे में नौकरी मिल सके, इसके लिए उसने दो लाख की सुपारी दी। यह घटना दो बातों की ओर इशारा करती है, एक तो यह कि बेरोजगारी की स्थिति इतनी भयावह है कि नौकरी के लिए युवा कुछ भी कर गुजरने को तैयार हैं। दूसरी कि वे संघर्ष कर अवसर का लाभ लेने में सक्षम नहीं हैं तथा बच्चों की परवरिश में हम और आप असफल साबित हो रहे हैं। कैसे कोई नवयुवक पिता की हत्या करने के बारे में सोच भी सकता है! यह घटना बेहद चिंताजनक हैं और युवाओं की मनोस्थिति को भी उजागर करती हैं। यह इस बात को भी विचार करने को मजबूर करती है कि अभिभावक नवयुवकों की पढ़ाई पर तो इतना ध्यान देते हैं, लेकिन उनकी क्या मनोदशा है, उसको लेकर कोई चिंता नहीं करते, नवयुवकों में क्या परिवर्तन हो रहा है। हम उसके आकलन में नाकामयाब साबित हो रहे हैं। अक्सर ऐसा देखा गया है कि माता–पिता केवल पढ़ाई पर ही ध्यान देते हैं, बच्चों के अन्य कार्यकलापों की अनदेखी कर देते हैं। जहां तक बेरोजगारी की बात है, तो अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष का भी कहना है कि भारत में बेरोजगारी एक बड़ी चुनौती है। हालांकि आइएमएफ ने उम्मीद जतायी है कि पिछले कुछ वर्षों के आर्थिक सुधारों से नयी नौकरियां उत्पन्न होंगी। श्रम सुधारों से भी रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, हालांकि उसने यह स्पष्ट कर दिया है कि अवसर रातों रात नहीं बढ़ेंगे। इसमें समय लगेगा, दूसरी ओर लेबर ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार भारत दुनिया का सबसे अधिक बेरोजगारों वाला देश बन गया है। भारत तेजी से तो बढ़ रहा है, लेकिन आर्थिक असमानता और बढ़ती बेरोजगारी उसकी दो सबसे बड़ी चुनौतियां हैं। शिक्षा को लेकर सर्वे करने वाली संस्था प्रथम एजुकेशन फांडेशन ने कुछ समय पहले अपनी वार्षिक रिपोर्ट असर यानी एनुअल स्टेटस ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट जारी की थी। यह रिपोर्ट चौंकाने वाली है। इस रिपोर्ट के अनुसार प्राथमिक स्कूलों की हालत तो पहले से ही खराब थी और अब जूनियर स्तर का भी हाल कुछ ऐसा होता नजर आ रहा है। असर की टीमों ने देश के २४ राज्यों के २८ जिलों में सर्वे किया। इसमें १६४१ से ज्यादा गांवों के ३० हजार से ज्यादा युवाओं ने हिस्सा लिया। सर्वे के लिए देश के करीब ३५ संस्थानों के दो हजार स्वयंसेवकों की भी मदद ली गयी। असर ने इस बार १४ से १८ वर्ष के बच्चों पर ध्यान केंद्रित किया। सर्वे में पाया गया कि पढ़ाई की कमजोरी अब बड़े बच्चों में भी देखी जा रही है। सर्वे के अनुसार ७६ फीसदी बच्चे पैसे तक नहीं गिन पाते, ५७ फीसदी को साधारण गुणा भाग नहीं आता। भाषा के मोर्चे पर स्थिति बेहद चिंताजनक है। अंग्रेजी तो छोड़िए, २५ फीसदी अपनी भाषा धारा प्रवाह बिना अटके नहीं पढ़ पाते। सामान्य ज्ञान और भूगोल के बारे में बच्चों की जानकारी बेहद कमजोर पायी गयी। ५८ फीसदी अपने राज्य का नक्शा नहीं पहचान पाये और १४ फीसदी को देश के नक्शे के बारे में जानकारी नहीं थी। सर्वे में करीब २८ फीसदी युवा देश की राजधानी का नाम नहीं बता पाये। देश को डिजिटल बनाने का जोर–शोर से प्रयास चल रहा है, लेकिन ५६ फीसदी युवाओं को कंप्यूटर का ज्ञान नहीं है। इंटरनेट के इस्तेमाल की भी कुछ ऐसी ही स्थिति है। लगभग ६४ फीसदी युवाओं ने कभी इंटरनेट का इस्तेमाल ही नहीं किया है। प्राथमिक की तरह यदि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी भी बुनियादी बातें नहीं सीख रहे हैं। तो यह बात गंभीर होती स्थिति की ओर इशारा करती है। १४ से १८ आयु वर्ग के बच्चे कामगारों की श्रेणी में आने की तैयारी कर रहे होते हैं, यानी इसका सीधा असर अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। यदि इन युवाओं को समय रहते तैयार नहीं किया गया, तो इसका असर भविष्य में देश के विकास पर पड़ेगा।

राष्ट्रीय आह्वान

मुन्ना कुमार शर्मा

राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

डायबिटीज के होने वाले नुकसान से स्वास्थ्य को बचाएँ

वैद्य वी.यस. पाण्डेय

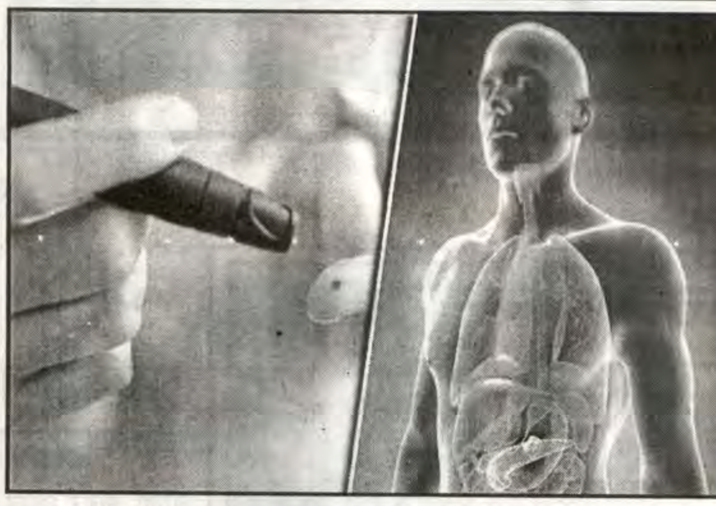

डायबिटीज (मधुमेह) आज पूरी दुनिया में महामारी के रूप में फैला हुआ है। हमारे देश में डायबिटीज के सबसे अधिक रोगी पाये जाते हैं। डायबिटीज की बीमारी के लिए भारत को इसकी राजधानी कहा जाता है।

डायबिटीज अंतःस्त्रावी क्लोम ग्रंथि (पैंक्रियाज) का रोग है। यह ग्रंथि आमाशय के नीचे ग्रहणी के बीच में पड़ी रहती है और इससे इंसुलिन नामक हार्मोन निकलकर रक्त में मिलता है। यह रक्त में उपस्थित शर्करा भोजन के द्वारा लिये गये कार्बोहाइड्रेट्स के पाचन पश्चात् पहुँचाती है और ग्लूकोज के रूप में रहती है।

शरीर में ऑक्सीजन एवं ग्लूकोज द्वारा ऊर्जा उत्पन्न होने के पश्चात शेष शर्करा की रक्त में अतिरिक्त मात्रा इंसुलिन द्वारा ही ग्लाइकोजन में परिवर्तित होकर यकृत और मांसपेशियों में एकत्र हो जाती है और रक्त में शर्करा बढ़ने नहीं देती है। डायबिटीज मुख्यतः ३ प्रकार की होती है।

(१) टाइप १ डायबिटीज–इससे पीड़ित लोगों में या तो इंसुलिन का निर्माण नहीं होता या फिर बहुत ही कम मात्रा में होता है। यह किसी भी आयुवर्ग के लोगों में हो सकती है लेकिन बच्चे और युवा इसके ज्यादा शिकार होते हैं। इसमें रक्त में ग्लूकोज का स्तर नियंत्रित रखने के लिए इंसुलिन का इंजेक्शन लेना पड़ता है। यह डायबिटीज किसी भी उम्र के व्यक्ति को हो सकती है। इस बीमारी में इलाज के लिए इंसुलिन पर निर्भर रहना पड़ता है। इसमें निम्न प्रमुख लक्षण होते हैं–

बार–बार पेशाब होना, भूख ज्यादा लगना, वजन कम होना विशेषकर युवा मरीजों में। इस तरह के रोगी में रक्त और पेशाब में अधिक शर्करा बढ़ जाती है। पेशाब में कीटोन की मात्रा बढ़ जाती है। कीटोन फैट और मसल्स के टूटने से बनता है। यूरिन जाँच में पाए जाने वाले कीटोन काफी नुकसानदेह होता है।

इस प्रकार के रोगियों में नेत्रहीनता, किडनी फेल्योर, नसों की क्षति, अंग–विच्छेदन हार्ट की समस्या आदि हो सकती है।

(२) टाइप २ डायबिटीज–पूरी दुनिया में डायबिटीज से पीड़ित लोगों में ६० प्रतिशत टाइप २ डायबिटीज से पीड़ित हैं। इसमें रक्त में शुगर का स्तर अनियंत्रित हो जाता है। मोटापे एवं डायबिटीज टाइप–२ का सीधा सम्बन्ध होता है। इसके लक्षण भी टाइप–१ के समान ही होते हैं लेकिन कम गंभीर होते हैं। इसलिए शुरू के कई साल बाद तक डाइग्नोज नहीं हो पाती है।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि खाली पेट होने की स्थिति में रक्त शर्करा ७० प्रतिशत से लेकर ११० मिलीग्राम प्रपति १०० सीसी के मध्य रहता है तथा भोजन के पश्चात १०० से १५० मि.ग्राम के आसपास रहती है। जब किसी कारणवश अग्नाशय से निकलने वाली इंसुलिन की मात्रा कम हो जाती है या जब शरीर प्रभावकारी तरीके से अपने द्वारा स्त्रावित उस इंसुलिन का उपयोग न कर पाने के कारण ग्लूकोज का स्तर बढ़ जाता है। यह बढ़ी हुई शर्करा की मात्रा गुर्दों द्वारा ठीक तौर पर अवशोषित नहीं हो पाती है। परिणामस्वरूप मूत्र द्वारा भी शर्करा निकलने लगती है।

(३) टाइप ३ डायबिटीज : गैस्टेशनल डायबिटीज हाइपर ग्लाइसीमिया है जोकि सबसे पहले गर्भावस्था के दौरान पहचानी जाती है। इसके लक्षण भी टाइप–२ डायबिटीज के समान ही होते हैं। गर्भवती महिला डायबिटीज का शिकार हो जाये तो माँ और बच्चे दोनों के स्वास्थ्य के लिए खतरा है। बच्चे का वजन और आकार दोनों ही ज्यादा हो सकते हैं।

डायबिटीज बीमारी नहीं बल्कि मेटाबोलिक सिंड्रोम है जोकि कई बीमारियों का घर है। यह शरीर के हर अंगों को प्रभावित करती है। अगर समय रहते इसका पता न चल पाये और नियंत्रित न किया जाये तो किडनी फेल होने और ब्रेन स्ट्रोक, रेटिनोपैथी और हार्ट अटैक का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। डायबिटीज से पीड़ित ५० प्रतिशत लोग कार्डियो वस्कुलरडिजीज (प्रमुख रूप से दिल की बीमारियों और स्ट्रोक) से मर जाते हैं।

डायबिटीज रेटिनोपैथी

डायबिटीज की बीमारी के कारण डायबिटीज रेटिनोपैथी की शिकायत भी हो जाती है। आँख में रेटिना की छोटी–छोटी रक्तनलिकाएँ नष्ट हो जाती हैं। आँख में पर्दे के अन्दर रक्तवाहीनियाँ फूलने लगती हैं और उनसे रक्त या तरल पदार्थ का रिसाव होने लगता है। इससे पर्दे के टिश्यूज में सूजन आ जाती है और इसमें पीले रंग का पदार्थ (वसा) जमा होने लगता है।

डायबिटीज की बीमारी के कारण असामान्य नई रक्तवाहीनियाँ पर्दे पर ऑप्टिकल नर्व (दृष्टि तंत्रिका) या वर्टीयस (पर्दे के आगे के रिक्त स्थान) में फैलने लगती है। यह नसों का जाल जब फटता है तब इनसे रक्त निकलने लगता है। इस कारण रोशनी आँख के पर्दे तक नहीं पहुँच पाती। कभी खिंचाव के कारण पर्दा पीछे से उखड़ भी जाता है।

दाँतों से संबंधित बीमारियाँ

डायबिटीज से पीड़ित लोगों में दाँतों से सम्बन्धित कई समस्याएँ सामने आती हैं। कभी–कभी इस बीमारी के कारण मुख के सभी दाँत नष्ट हो जाते हैं।

ओस्टियोपोरोसिस–यह एक बीमारी है जोकि हड्डियों की कमजोरी के कारण होती है। डायबिटीज होने के कारण इस बीमारी का खतरा ७० फीसदी बढ़ जाता है। इसके प्रति लोगों का जागरूक न होना समस्या को और बढ़ा देता है। इस बीमारी के मरीजों में पुरुषों के मुकाबले महिलाओं की संख्या ज्यादा पाई जाती है। ओस्टियोपोरोसिस की शिकायतें लगातार बढ़ रही हैं। उसका भी एक कारण यह है कि शरीर का कैल्शियम पेशाब के रास्ते निकलता रहता है।

कैल्शियम का रूकना तभी बन्द होता है जब शरीर में एसीडिटी बढ़ती है। क्षार तत्व की कमी होती है। क्षार तभी रुकेगा तब एसिड कम होगा और ऐसे समय में हड्डियों का क्षरण कम होगा।

इसका कोई खास लक्षण नहीं होता इसलिए ये देर से पकड़ में आती है। इससे बचने के लिए खाना–पीना और व्यायाम जरूरी है। इसमें विटामिन व काफी फायदेमंद है। जिसका सबसे बड़ा स्रोत धूप है। इस रोग की जानकारी न होने के कारण इलाज नहीं हो पाता है। इस रोग की सबसे अच्छी दवा भी आयुर्वेद में ही है। मुक्तापिष्टी, अश्वगंधा एक्सट्रेक्ट, प्रवाल पंचामृत रस (मोतीयुक्त) एवं कामदुधारस मिलाकर योग बनाकर दिन में ३ बार दूध से सेवन करें।

जैसाकि ऊपर यह बताया जा चुका है कि डायबिटीज बीमारी नहीं है बल्कि मेटाबोलिक सिंड्रोम है। कई बीमारियों को बढ़ावा देता है। यह रोग एथलीट्स फुट (एक फंगस संक्रमण), कैलस (पैरों की त्वचा का मोटा होना और बाद में जख्म बनना), पैरों से संबंधित अन्य विकृतियों की समस्या को बढ़ा सकता है। मधुमेह परिधीय धमनी रोंग (पेरिफेरल आर्टरी डिजीज संक्षेप में P.A.D.) से ग्रस्त होने के खतरे को बढ़ा देता है। इस रोग में हृदय और मस्तिष्क के बाहर धमनियों से संकुचन या अवरोध पैदा हो जाता है। P.A.D. के कारण रक्त की आपूर्ति प्रभावित हो सकती है। इस कारण घाव को भरने में अधिक समय लगता है या फिर नस नर्व की क्षति की वजह से प्रभावित व्यक्ति अपने पैर में कुछ भी महसूस करने की क्षमता खो सकता है। ऐसे व्यक्ति जिनकी नसें (नर्व) मधुमेह के कारण क्षतिग्रस्त हो गई हों वे विश्वास नहीं कर सकते कि उनके शरीर में मामूली रूप से कटने या छाले पड़ने पर कभी न ठीक होने वाले घाव बन सकते हैं।

लक्षण

१. पैर या पैर के निचले भाग में छाले। २. चलने में कठिनाई। ३. पैरों के रंग में परिवर्तन जैसे नीला काला या लाल हो जाना। ४. पैर का ठंडा होना। ५. पैर या टखने में सूजन। ६. बुखार आना। ७. त्वचा का लाल होना। ८. सूजन या संक्रमण के अन्य लक्षण आदि।

उपचार

डायबिटीज फुट के लिए पहले तो डायबिटीज की बीमारी को नियंत्रित करना चाहिए। इस बीमारीके लिए मधुमेहनाशिनी वटी (गोल्ड) + वृ. वंगेश्वर रस + मुक्तापिष्टी + रसराज रस + सतगिलोय + मुक्तापिष्टी + बसन्तकुसुमाकर रस का योग बनाकर दिन में ३ बार दूध के साथ सेवन करें परन्तु यदि पित्त विकास या यूरिया भी बढ़ी हुई हो तो आप सूतशेखर रस गोल्ड को भी योग में डाल लें। खाना खाने के बाद त्रिफला गु. + कांचनार गु. का प्रयोग करें इससे P.A.D. की समस्या दूर हो जायेगी।

गोसेवा से सब कुछ प्राप्त हो सकता है

✍ डॉ० गणेशदत्त जही सारस्वत

सेवा का एक प्रमुख स्वरूप है गो–सेवा। गाय रुद्रों की माता, वसुओं की पुत्री, अदितिपुत्रों की बहन और घृतरूप अमृत का खजाना है–'माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसाऽऽदितियानाममृतस्य नाभिः।' वह परम दामयी, वात्सल्यमयी तथा सुर–नर मूनिसेविता है। वह सदा पवित्र और सबका कल्याण करने वाली होती है। 'सदा गावः शुचयो विश्वधायसः' (सामवेदसंहिता) उससे कोई भी उऋण नहीं हो सकता। उसकी सेवा से गोसेवक निष्पाप हो जाता है। गोखुर से उड़ती हुई धूलि से आच्छादित आकाश पृथ्वी को ऊसर होने से बचाता है। गोपालन–व्रत स्वार्थ नहीं, परमार्थ है। गाय जहाँ पर पानी पाती है अथवा जिस जल से पार होती है, वहाँ सरस्वती जी विद्यमान होती है। यत्र तीर्थ सदा गावः पिबन्ति तृषिता जलम्। उत्तरन्त्यथवा येन स्थिता तत्र सरस्वती।। 'भगवत्सेवा, पूजा–उपासना, व्रत–उपवास, त्याग–तपस्या, दान–दया, सत्य–अहिंसा, सेवा–संयम, तीर्थ–दर्शन और गंगा–स्थान आदि के करने से जो पुण्य प्राप्त होता है, वह सरा का सारा पुण्य केवल गो–सेवा करने से सहज ही उपलब्ध हो जाता है

तीर्थस्नानेषु यत्पुण्यं यत्पुण्यं विप्रभोजने।
यत्पुण्यं च महादाने यत्पुण्यं हरिसेवने।।
भूमिपर्यटने यत्तु सत्यावाक्येषु यभ्दवेत्।
तत्पुण्यं प्राप्यते सद्यः केवलं धेनुसेवया।।

धर्मशास्त्रों में उल्लेख है कि पंचगव्य का सेवन करने से समस्त पाप राशि का क्षय उसी प्रकार हो जाता है, जैसे प्रज्जवलित अग्नि से ईधन भस्म हो जाता है–

यत् त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके।
प्राशनात् पंचगव्यस्य दहत्वग्निरिवेन्धनम।।

केवल पारमार्थिक ही नहीं, लौकिक समृद्धि में भी गोवंश का उल्लेखनीय योगदान है। भारतीय कृषि एवं अर्थव्यवस्था का तो वह आधार ही है। गाय अपने दूध, दही, घी, गोबर, मूत्र, हड्डी चमड़ा, बालों और गोधन सींगों से हमारा सब प्रकार का हित कल्याण करती है। गोधन के बराबर जगत् में अन्य कोई धन नहीं है। वेदव्यास जी कहते

हैं–'गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किञ्चिदिहाच्युत' (महाभारत) में इस संसार में गायों के समान दूसरा कोई धन नहीं समझता। इनके नाम तथा गुणों का कीर्तन–श्रवण, इनका दान तथा इनका दर्शन–ये सारे कार्य सम्पूर्ण पापों को दूर करके परम कल्याण प्रदान करने वाले हैं। गोवेश के प्रताप से भी भारत की भूमि सोना उगलती थी तथा विश्व में सोने की चिड़िया कहलाने का उसे गौरव प्राप्त था। इनकी स्तुति में कहा गया है– 'त्वं माता सर्वदेवानां त्वं च यज्ञस्य कारणम। त्वं तीर्थ सर्वतीर्थानां नमस्तेस्तु सदानघे।।' हे पापरहिते, तुम समस्त देवों की जननी हो, तुम यज्ञ की कारणरूपा हो, तुम समस्त तीर्थों की महातीर्थ हो, तुमको सदैव नमस्कार है।

अन्यत्र प्रार्थना की गयी है 'या लक्ष्मी, सर्वभूतानां या च देवेषु संस्थिता। धेनुरुपेण सा देवी मम शान्ति प्रयच्छतु' जो समस्त प्राणियों में तत्वतः वास्तविक लक्ष्मी है, और जो सभी देवताओं में हविष्यरूप में स्थित है, वह धेनुरूपा देवी मुझे सुख शान्ति प्रदान करे तथा 'सा धेनुरूपा देवी मुझे सुख शान्ति प्रदान करे तथा 'सा ध ेनुर्वरदास्तु में' वह गोरूपा धेनु मेरे लिए वरदायिनी हो।

गो–सेवा अनन्त फल है। जो पुरुष गौओं की सेवा और सब प्रकार से उनका अनुगमन करता है, उससे संतुष्ट होकर गौएं उसे अत्यन्त दुर्लभ वर प्रदान करती हैं। इसलिए गौओं के साथ मन से कभी द्रोह न करे, उन्हें सदा सुख पहुँचाये, उनका यथोचित सत्कार करे और नमस्कार आदि के द्वारा उनका पूजन करता रहे। जो मनुष्य जितेन्द्रिय और प्रसन्नचित होकर नित्य गौओं की सेवा करता है, वह समृद्धि भागी होता है। महाराज दिलीप ने महारानी सुदक्षिणा के साथ इक्कीस दिन तक नन्दिनी की आराधना करके उससे पुत्र–प्राप्ति का आशीर्वाद प्राप्त किया था। दिलीप के पुत्र रत्न थे रघु। ऐसी श्रीसमृद्धिदायिनी गौओं को कभी हेय दृष्टि से नहीं देखना चाहिए, मारना तो कोसों दूर है। उनके लिए उत्तम, प्रशस्त और स्वच्छ गोशाला बनायी जानी चाहिए। गौओं को अच्छा जल पीने के लिए तथा अच्छे से अच्छा पदार्थ खाने के लिए दिया जाना चाहिए।

अथर्ववेद के तीसरे काण्ड के चौदहवें सूक्त गोष्ठसूक्त में आगे कहा गया है कि गौओं से अत्यन्त स्नेह करना चाहिए, जिससे कि वे हमारे साथ आनन्द से मिल जुलकर रहें। यह गोशाला अत्यन्त उत्तम है, इससे रहकर वे पुष्ट हो। अपनी शोभा और पुष्टि को बढ़ाती हुई वे वृद्धि को प्राप्त होती रहें। हम सब ऐसी उत्तम गौओं को प्राप्त करें और उनका पालन करें। ये गौएं 'वन्दनीयाश्च सेव्यास्तु नित्यशः' प्रतिदिन वन्दनीय, पूजनीय तथा सेवा–उपासना के योग्य हैं।

गाय अवध्य है। वेद में गाय को 'अघन्या' कहा गया है, जिसका अर्थ है अवध्य अर्थात् जो वध के योगय नहीं है। बैल को भी 'अध्न्य' माना गया है 'गवां यः पतिरध्न्यः (अथर्व० ६१४११७) यहां बैल को गाय का पति बतलाया गया है।

अन्य मतावलम्बियों ने भी गोवध का निषेध किया है। मुल्ला मोहम्मद वाकर हुसैनी (महरूल अनवर) का कथन है कि गाय को मारने वाला, फलदार दरख्त काटने वाला और शराब पीने वाला कभी नहीं बख्शा जाएगा। **हजरत आयशा (मोहम्मद साबह की धर्मपत्नी) कहती है-'फरमाया रसूल अल्लह ने कि गाय का दूध शिफा और घी दवा है तथा उसका मांस लाइलाज मर्ज (रोग) है।' ऐसा ही कथन अल्लामा जलालुद्दीन सियुती (अलरहमत) का है- 'गाय के गोश्त में बीमारी है, उसके दूध में दुआ और घी में शिफा है।' इसलिए उस पर छुरी नहीं चलायी जानी चाहिए।**

महात्मा गांधी कहते हैं कि मेरा सारा प्रयत्न गो–वध रोकने के लिए है। जो गाय को बचाने के लिए प्राण होम देने को तैयार नहीं है, वह हिन्दू नहीं कहला सकता। उनकी दृष्टि में गो–रक्षा का प्रश्न स्वराज्य के प्रश्न से भी बड़ा है। २५ जनवरी सन् १९२५ ई० प्रवचन में उन्होंने कहा था 'मेरे विचार के अनुसार गोरक्षा का सवाल स्वराज्य के सवाल से छोटा नहीं। कई बातों में मैं इसे स्वराज्य के सवाले से भी बड़ा मानता हूँ। मेरे नजदीक गो–वध और मनुष्य–वध एक ही चीज है। शेष पृष्ठ 10 पर

आज भी औरों से अलग है भाजपा

प्रतिक्रिया

१. यह कहना गलत है। भाजपा तो अन्य दलों जैसी ही हो गई है।

२. ध्वज में १/३ हरा रंग १९८० से है।

३. ३८ वर्षों से वह भी गाँधी वादी हो गई है।

४. सिख–जैन–बौद्ध अल्पसंख्यक भी माने जाते हैं और हिन्दू समाज के अंग भी माने जाते हैं। बड़ी विचित्र स्थिति है।

५. भाजपा में भी अल्पसंख्यक मोर्चा है अन्य दलों की तरह।

६. भाजपा भी तुष्टीकरण की समर्थक है।

७. भाजपा नेताओ ने ही १९७८ में अल्पसंख्यक आयोग बनाया था।

८. भाजपा भी ४६ प्रतिशत तक के समुदाय को अल्पसंख्यक मानती है जबकि किसी भी समुदाय को अल्पसंख्यक मानना संविधान के प्रतिकूल है।

९. भाजपा भी संविधान को उत्तम कहती है जबकि डा० अम्बेडकर ने स्वयं कहा था कि मुझ से ऐसा संविधान बनवाया गया है। मुझे खुली छूट नहीं थी। उन्होंने इसे उत्तम नहीं माना था।

१०. धर्म परिवर्तन करके, ईसाई–मुस्लिमों को भी अनुसूचित जाति–जनजाति का लाभ मिलता रहता है जबकि इन्हें लाभ नहीं मिलना चाहिए क्योंकि जातिवादी व्यवस्था के कारण यह लाभ केवल हिन्दुओं की पिछड़ी जातियों के लिए ही था।

११. भाजपा ने ६४९० एकड़ भूमि बांग्लादेश को दे दी जिस पर किसी भी पार्टी ने आपत्ति नहीं की।

१२. भाजपा ने ए एम यू अलीगढ़ तथा जे एन यू दिल्ली को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अधिकार क्षेत्र से मुक्त कर दिया है।

१३. पटेल के नाम से भारी बहुमत पाने वाले मोदी अब गांधी के गुण गा रहे हैं। यह हिन्दू का दुर्भाग्य है कि उसकी परवाह किसी को नहीं है।

१४. हिन्दुओं के घटते हुए प्रश्न पर भाजपा भी मौन रहती है।

आई० डी० गुलाटी, बुलन्दशहर

पाकिस्तानी विधुत की नई फाल्टलाईन

✍ हरिकृष्ण निगम

पाकिस्तान आज एक असफल, अराजक व टाइम बम की तरह टिक–टिक करता हुआ किसी बिस्फोट के लिए इन्तजार करता हुआ देश क्या कहा जाने लगा है? इसके लिए हमें थोडा पीछे मुड़कर देखना होगा। एक समय जब असिफ अली जरदारी, यूसुफ रजा गिलानी व जनरल कयानी का देश पर वर्चस्व था उनकी एक बड़ी शिकायत थी कि आंतकबाद से लड़ने के लिए अमेरिका उन्हें पर्याप्त धनराशि नहीं दे रहा है। एक बार तो जरदारी ने "न्यूयार्क टाइम्स" से जुड़े पत्रकार अहमद रशीद से यहाँ तक गुस्से में कहा था कि अमेरिका ने जनरल परेवज मुशर्रफ को २००२ और २००८ के बीच ११ बिलियन डालर की सहायता दी थी जिसमें हथियारों व सैनिक साज–सज्जा की आपूर्ति अलग थी पर मुझे बिना पैसा दिए वे तालिबान की चुनौती से जूझने के लिए अलग छोड़ चुके हैं। अतिरेकियों से लड़ने के लिए कोई रणनीतिक योजना नही है, भ्रष्टाचार आसमान छू रहा है, कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति कर नहीं देता है, सुधारों का नाम निशान नहीं है और विदेश नीति प्रतिदिनदबावों में बदली जाती है।

इन सब के साथ कगार पर आए छिन्न भिन्न होते हुए अपने देश के कुछ विस्मचजनक आंकड़े अहमद रशीद ने सन २०१२ में प्रकाशित अपने ग्रंथ "पाकिस्तान आन द ब्रिंक" में दे डाले जो स्वयं पाक, अफगानिस्तान व अमेरिका के भविष्य के विषय में थे पाकिस्तान के विघटन, पुनर्गठन व अंधकारमय भविष्य का संकेत देते हुए उन्होंने कल कि सन २००७ में अतंकवादियों ने २१ निहत्थे नागरिकों की हत्या की भी जो २००८ में की गई हत्याओं से ३३ प्रतिशत अधिक थी। जहाँ तक क्वेटा और चेनाई पहाडियो में अणु–आयुनों के संयत्र हैं और जहाँ भारत के विरुद्ध आणविक प्रक्षेपास्त्रों से लैस शीर्ष मुल विशेष परिसर हैं उन्हें मीलों दूर से छावनियों के कटघरे में रखा गया है। अहमद रशीद ने आगे य... लिखा कि सन २०६ में ८७ बड़े हमले आत्मघाती बमबारों न किये थे जिसके साथ साथ उसी वर्ष शिया मुसलमानों पर ६७ सम्प्रदायिक हमले हुए जिनमें शिया और इस्माइली बोहरा व अहमदिया मारेगए थे। सिर्फ कराची में ही ७४७ लोगों की बन्दूकधारियों द्वारा हत्या की गई थी जिसने ७ पत्रकार भी थे। बलूचिस्तान में सन २००३ से ही सशस्त्र विद्रोह चल रहा था और विशेष रूप से पंजाबी नौकरशाहों व सैनिको के विरुद्ध भड़क चुकी थी जिसमें अनेक नागरिक व २०० सुरक्षा बलों के सैनिक मारे गए थे। पाकिस्तानी सत्ता का नियंत्रण बलूचिस्तान के एक बड़ा हिस्सा लुप्त हो चुका था और अमेरिका व पाश्चिमी देशों ने भी अपने दूर गामी हितों को बचाने के लिए सहायता पर जब तब अंकुश लगाकर सारा अणु आयुद्यों का पर्वतीय क्षेत्र अप्रत्यक्ष रूप से अपने कब्जे में कर लिया था।

अमेरिका को भलीभांति इस तथ्य का ज्ञान था कि पाकिस्तानी तालिबान ने दक्षिण के पहाड़ी इलाकों मे अथवा एफ.ए.टी.ए. (फाटा–फ्रन्टियर एरिया ट्राइबल एजेन्सी) की ओर अपना मुंह मोड़ दिया है और सरकारी तबका वहाँ मात्र कागजों पर छाबनियों में सिमट कर रह गया है। तत्कालीन प्रधानमंत्री गिलानी और उस समय के इन्टीरियर मिनिस्टर रहमत मलिक ने सीनेट में यह बात स्वीकार की और वे यही कहते रहे कि अफगान सरकार–भारत और रूस एक साठ–गांठ के द्वारा बलूचिस्तान को अपना प्रभाव क्षेत्र बना चुके है और सिंधी व पंजाबी सैनिक अफसरों का वहाँ रहना मुश्किल हो गया है। खैबर पख्तूनरण प्रांत में राजकीय संस्थान बन्द हो चुके हैं और दस लाख लोग अपने घरों को छोड़कर भाग्र चुके हैं। पेशावर में श्री प्रान्तीय सरकार के बड़े अधिकारी भी छिपकर सुरक्षित रहने के लिए मजबूर है क्योंकि उन्हें हत्या की धमकियाँ रोज मिलती हैं। सन २००६ में ३०० से अधिक अपहरण फिरौती के प्रकरणों से सारा पेशाबर भयाक्रान्त था।

इस बीच पाकिस्तानी तालिबान कई जनजातीय "मिलिशिया" समूहों को एक नए संगठन का रूप दे चुका था। वैसे १२ सितम्बर २००७ में ही उत्तरी वजीरिस्तान के लगभग ४०० कबाइली नेताओं ने अपने लाखों अनुयाईयो के साथ "तहरीक–ए–तालिबान पाकिस्तान" पहले ही गठित कर लिया था और एक युवा आतंकवादी बैतुल्लाह मेहसूद को अपना नेता घोषित किया था। उनका उद्देश्य एक जुट होकर नैटों के सैन्य बलों के विरुद्ध युद्ध और जेहाद छेड़ना था। मेहसूद के नियंत्रण में ४०,००० सशस्त्र जेहादी थे जिनमें पंजाबी व सिन्धी युवक जुड़ते रहे। अपनी सरकार को निशाना बनाने के साथ वे स्वातधारी पर नियंत्रण करने में जुटगए और सन २००६ मैं इस्लामाबाद से मात्र ६० मील दूर उत्तर के जिलों में उनका वर्चस्व हो गया। वहां पर अफगानियों, मध्य एशियाई. अल. कायदा और फन्टियर एरिया ट्राइबल एजेन्सी (फाटा) के कबाइलियों की संख्या इतनी बढ़गई कि पाकिस्तान के हाथ से स्वात निकल गया।

सरिया को सख्ती से लागू करना कोड़े लगवाना लड़कियो के स्कूलों को बन्द करवाना, बुर्का अनिवार्य रूप से पहनना और दूसरे अत्याचारी फतवो के कारण पाकिस्तानकी संसद व बुद्विजीवी भी स्तभ थे। जरदारी तो इने डरे थे कि उन्होंने स्वयं १४ अप्रैल २००६ में सीनेट में शरिया कानून पास करवादिया। यह घोषणामी इनामों ने की कि प्रजातंत्र कानून प्रणाली प काफिरोंद्वारा चलाई गई कोई भी पदूवि प्रणाली अवैध मानी जायेगी। एक पुराने अतिरेकी प्रचारक सूफी मोहम्मद जिसने एक समय अफगानिस्तान में अमेरिकयों की हत्या करने की सार्वजनिक कसम खाई थी उसने एक नई घोषणा कर अपने दामाद मौलाना काजी फजलुत्ता को स्वात में तालिबान का एक क्षत्र नेता भी घोषित कर दिया जिससे स्थिति काफी गम्भीर व दशहत मरी ही नहीं बन गई बल्कि तब से यही फजलुत्ता पिछले तीन वर्षो से अपने चलाए एफ.एम. रेडियो स्टेशनो से विषवमन कर रहा है जिसे पाक सेना भी बन्द नही करबा सकी है।

स्वात में होने वाले इस घटना पर अमेरिकी अधिकारी चितित थे। सेक्रेटरी ऑफ स्टेट हिलैरी किलंटन तुरत एक सप्ताह के अन्दर बगदाद पहुंची और कही पाकिस्तान इस असफलता से उसी क्षेत्र में अपने आणविक संयत्रों व हायेयारों के जखीरे पर नियंत्रण न खो बैठे उनके अलावा सुरक्षा सचिव राबर्ट गेट्स और एडमिरल मुलेन भी यही महसूस कर रहे थे। जनरल कयानी का यह कहना कि पाकिस्तान अपनी आतरिक सुरक्षा के लिए सक्षम है यह उन्हें भी नहीं समझ में आ रहा था।

स्वात घाटी पहले भी पर्यटको का सार्वाधिक सुन्दर और आकर्षक घूमने का स्थान माना जाता रहा था और पूर्व में जाने के लिए एक राजनीतिक मार्ग माना जाता है जहां से यह भरतीय कश्मीर में खुलता है और दूसरी ओर पश्चिम दिशा में यह अफगानिस्तान तक जाता हैं। और यह स्थान अब तक अमेरिका के ड्रोनविमानो के हमले की परिधी के बाहर ही माना जाता था तालिबान द्वारा इस पर कब्जे का साफ अर्थ था कि वह उत्तरी पाकिस्तान के नगरों में जाने वाली सड़को पर और इस्लामाबाद पर भी नियंत्रण रख सकता। एक समय फजलुल्ला ने ओसामा बिन लादेन को भी इस सुरक्षित जगह पर छिपकर रहने का आमंत्रण दे दिया था। स्वात से लगे हुए बुनरे, शोगला और दीर नाम के जिलो में पहुँचने के बाद सारे प्रांत पर सहज ही छा सकते थे। अप्रैल के महीने में ही स्थिति गम्भीर दीख रही थी कि राष्ट्रपति ओबामा ने स्वात पर वार्ता के लिए अपनी कैबिनट की मीटिंग बुलाई थी जिससे पाकिस्तान को बचाया जा सके उसके बाद सेना ने थल सेना व वायुसेना ने बड़ा हमला बोला था जिसमें तोपखाने मिंगोरा में छिपे ४००० लड़ाकू तालिबानों को निशाना बनाया गया था। लगभग ३०,००० पाकिस्तानी सैनिक ने इसमें भाग लिया था जैसा यहाँ पहले कभी नहीं हुआ था। भारत से आशवासन मांग कर कश्मीरी सेना को भी हटाकर स्वात में जोड़ा गया था। जून आते आते स्वात से तालिबानी लड़ाकू निकाल दिए गए जिससे सेना के ३०० सैनिक और २००० तालिबानी मार डाले गए थे तथा उनके नेता बच रह एफ.ए.टी.ए. और एडमिरल मुलेन ने जनरल कयानी के लिए ७०० सैनिको का एक नया कमाण्डों बल प्रशिक्षण व नए हथियारों से सुज्जित कराया। यह पूरा युद्ध पहली बार अमेरिकी मदद से स्वात के विहद पाकिस्तानी सेना ने लड़ा था, यह सन २००६ का घटनाक्रम था। पर उसके बाद सन २०११ में फिर अशान्ति की आग वहां भड़क उठी थी। ओबामा प्रशासन ने रिचर्ड हौल ब्रक के माध्यम से बात की जिसमें सेक्रेटरी आभ स्टेट हिलैरी किलंटन ने फिर बड़ा हिस्सा लिया था। पर बिलियन डालरों की अपार राशि की सहायता के बाद भी पाकिस्तान व अमेरिका के रिश्ते बिगड़ते रहे और एक दूसरे पर वे शक करते ही रहे।

यद्यपि ओसामा बिन'लादेन एबटावाद में ६ सालों से छिपा रहा था यह उसे खोजनिकालने व अमेरिकाद्वारा मारने के बाद भी अमेरिका व स्वयंपाकिस्तान ने इसके लिए जिम्मेदार किसी को भी दण्डित नहीं किया। आप में एक गहरा रहस्य लगता है। नेटो सैन्य बलों और सीमाबर्ती अमेरिकी व पाकिस्तानी सैनिक कभी खैबर दर्रे, कभी खुर्रम एजेन्सी क्षेत्र कभी उत्तरी सिंध के शिकारपुर या इस्लामाबाद के निकट के क्षेत्रों में हेलीकाप्टर गनशिप द्वारा कानी तोपखानों से हमला करते रहे इस सारे अभियान का लक्ष्य अणु आयुधों से संयत्रों को बचाना हैं दक्षिणी और उत्तरी वजीरिस्तान और बलूचिस्तान आज भी युद्ध का केन्द्र बिन्दु बना है।

इसी बीच अक्टूबर २००६ में अमेरिकी एजेयिों ने पाकिस्तान में पैदा हुए मुख्यत अमेरिकी नागरिक डेविड हेडली को गिरफ्तार किया जिसने खुद दावा किया था कि वह स्वंय मुम्बई में २००० में लश्करे–तैयोबा के लिए बदले के लिए विस्तृत जानकारी संग्रहकर चुका था। इसने किस तरह अमेरिका व भारत के रिश्तो को प्रभावित किया था यह सर्व विदित है। मुम्बई के नरसंहार के पी डे आई. एस.आई. लश्करे तैयबा के नेता हाफिज, मोहम्मद सईद, जाकिर रहमान लखवी और जनरल पाशा अली अन्य तीनों के नाम जिस तरह आए थे उससे पाकिस्तान बेनकाब हो गया था। तभी विकीलिकश द्वारा ६२००० अमेरीकी आम लेखन जो पाकिस्तान व अफगानिस्तान युद्ध से सम्बधित जारी हुए थे। यह वर्गीकृत सूचना खुलासा होते ही एक विस्फोट जैसा काम कर रही थी लेकिन पाकिस्तान आई.एस.आई. व सी.आई के अनेक स्तरों पर उनकी साठ–गाठ पाई गई थी। पाकिस्तान को अमेरिका का मोस्ट सहयोगी तक कहा जा चुका था। अमेरिका उसकी अनियंत्रित अराजकता को जैसे तैसे लीपा पोती कर उसे बरकरार रखना चहता था जिसका उदेश्य पाकिस्तान के आणविक दांत भी तोड़ देना था,

यदि आज कोई यह जानना चाहे कि पाकिस्तान के विघटन या हाने वाले भूकम्प की वस्तुतः फास्टलाइन या उसका 'एपीसेन्टर कहों हो सकता है तो इसके लिए कुछ उत्तर रोज लीखते हैं। जन बेल्ट में कुछ दिनो पर वे नेशन ज्याक्रफिक के सितम्बर २००७ के अंकम स्ट्रनज कहाँ हो सकता है तो इसके लिए शेष पृष्ठ 11 पर

बूढ़े शेखों के लिए सज रहे हैं मासूम हिन्दुस्तानी लड़कियों के बाजार

साभार-राष्ट्रधर्म

हैदराबाद के मुसलमानों की गरीबी का नाजायज फायदा उठाकर उनकी नाबालिग लड़कियों को अरब के बूढ़े–बूढ़े शेख लोग निकाह की आढ़ में खरीद रहे हैं। ये वृद्ध एक निश्चित अवधि के लिए इन लड़कियों से निकाह रचाने का नाटक करते हैं और जब मन भर जाता है, तो उन्हें भाग्य भरोसे छोड़कर स्वदेश लौट जाते हैं। यहं भी आरोप है कि बूढ़े अरब शेख गरीब हिन्दुस्तानी लड़कियों से विवाह रचाने केनाम पर उन्हें स्वदेश ले जाते हैं और वहाँ उनसे वेश्यावृत्ति करवाते हैं। यह काम कई दशकों से चल रहा है और वहाँ उनसे वेश्यावृत्ति करवाते हैं। यह काम कई दशकों से चल रहा है और वहाँ की सरकार इसे रोकने में आज तक विफल रही है। हैदराबाद पुलिस ने इस तरह का घिनौना काम करने वाले एक गिरोह के पच्चीस व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है, जिनमें एक दर्जन अरब नागरिक, पाँच काजी और कई महिलाएँ भी शामिल हैं। सरकार ने पाँच काजियों के निकाह करवाने के लाइसेन्स को रद्द करने की घोषणा की हैं।

उर्दू के सियासत (२६ सितम्बर) अखबार के अनुसार तेलंगाना के अल्पसंख्यक कल्याण विभाग ने फैसला किया हैं कि जिन काजियों ने बूढ़े अरबों से रिश्वत लेकर तेलंगाना की मासूम मुस्लिम बच्चियों की जिन्दगी से खिलवाड़ किया है उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाये। जिन मुस्लिम काजियों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है, उनकी संख्या पाँच के क़रीब बतायी जाती है। इन काजियों को उनके पद से बर्खास्त कर दिया जायेगा और भविष्य में उन्हें कोई भी निकाह करवाने की अनुमति नहीं होगी। अल्पसंख्यक विभाग के सचिव सैयद उमर जलील ने संवाददाताओं को बताया कि काजियों की शर्मनाक गतिविधियों को देखते हुए उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का फैसला किया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि बूढ़े अरब जिस तरह से अपनी हवस के लिए बेचारी मुस्लिम लड़कियों की जिन्दगी तबाह कर रहे हैं, उसे किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। अगर कोई भी विदेशी तेलंगाना में आकर स्थानीय लड़की से निकाह करना चाहता है, तो उसे अपने देश से एक प्रमाणपत्र लाना होगा कि उसके निकाह पर वहाँ की सरकार को कोई आपत्ति नहीं है। अरब देशों के नागरिकों को निकाह करने से एक माह पूर्व पुलिस कमिश्नर के कार्यालय में एक प्रार्थनापत्र देना होगा, जिसमें भावी दुल्हन के बारे में पूरी जानकारी देनी होगी। पुलिस हर मामले की बारीकी से जाँच करेगी और उसके बाद ही निकाह की अनुमति दी जायेगी। निकाह के अवसर पर बाल कल्याण विभाग के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद रहेंगे और निकाह के समय ही हर अरब नागरिक को अपनी दुल्हन के नाम दस लाख रुपये की धनराशि डिपोजिट किसी स्थानीय बैंक में करवानी होगी। उन्होंने कहा कि काजियों के कारण मुस्लिम समाज विश्व में बदनाम हो रहाहै और पिछले पच्चीस वर्ष से इस तरह की घटनाएँ हो रही हैं। स्थानीय लोगों की गरीबी का फायदा उठाया जा रहा है। इस काम में दलालों, काजियों के अतिरिक्त कुछ लालची लोग भी शामिल हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि निश्चित अवधि के लिए निकाह की इस्लाम में कोई व्यवस्था नहीं है और यह एक तरह की वेश्यावृत्ति है। अखबार में अनेक काजियों के नाम भी दिये हैं, लेकिन हम उन्हें प्रकाशित नहीं कर रहे हैं।

इसी अखबार (२१ सितम्बर) के अंक के अनुसार पुलिस ने कॉन्ट्रेक्ट शादियों का रैकेट उद्घाटित किया हैं। पुलिस उपायुक्त सत्यनारायण के अनुसार दो महीने पूर्व पुराने हैदराबाद नगर के फलकनामा क्षेत्र में एक नाबालिग लड़की का एक बूढ़े अरब से फर्जी निकाह किया गया था। बताया जाता है कि इस ७५ वर्षीय अरब ने इस पन्द्रह वर्षीय लड़की से निकाह करने के लिए पाँच लाख रुपये विभिन्न लोगों को दिये थे, जिनमें इस लड़की अपनी विद्यवा माँ के साथ रह रही थी। उसका चाचा उसकी माँ को धोखा देकर अपने घर ले गया और उसने जबरन उसका निकाह इस ७५ वर्षीय बूढ़े से कर दिया। जब इस बात की सूचना इस लड़की की विधवा माँ को मिली, तो उसने पुलिस में शिकायत दर्ज करवायी। पुलिस ने जाँच पड़ताल करने के बाद इस रैकेट से सम्बन्धित अनेक लोगों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस की जाँच–पड़ताल के बाद पता चला कि ये बूढ़े अरब शेख भारत आते हैं और वे कुछ समय के लिए लड़की को खरीदते हैं। इस कारोबार की आड़ में फर्जी निकाह का नाटक किया जाता है। काजी और दलाल भी इस गिरोह से मिले हुए होते हैं ओर वे एक निश्चित अवधि के लिए इन बच्चियों का निकाह इन बूढ़ों से करवाते हैं और निकाह के समय ही तलाक और खुलानामा पर भी हस्ताक्षर करवा देते हैं। जब इन बूढ़ों का इन बच्चियों से मन भर जाता है, तो उन्हें भाग्य भरोसे छोड़कर अपने देश की राह लेते हैं। पुराने हैदराबाद मे ऐसी सकड़ों बच्चियाँ मौजूद हैं, जिनका यौन शोषण करने के बाद बूढ़े अरब उन्हें भारत में छोड़कर स्वयं चलते बने। पुलिस ने बताया कि इस तरह का फर्जी निकाह करवाने वाले जिन एक दर्जन वृद्ध अरबों को हिरासत में लिया गया है, उनमें जॉर्डन के पाँच नागरिक अल मायाही हबीब अली ईसा, अल सलही तलीब हुमैद अली, अल उबैदानी जुमा शिनून सुलेमान, अल सलेही नसर खलीफा हमादी, अल कासिमी हसन मजाउल मोहम्मद और कतर के नागरिक उमर मोहम्मद सेराज अब्दल रहमान, हमद जबीर ओ अल कुवेरी, सफेलदीन मोहमम्द मोहम्मेदनोर सलही आदि शामिल हैं। उन्होंने कहा कि फर्जी निकाहनामे और तलाकनामे बनाने वाले मुम्बई के सदर काजी फरीद अहमद खाँ और उनके सहायक काजी मनवर अली को भी गिरफ्तार किया गया है। इसके अतिरिक्त पाँच स्थानीय दलालों को भी गिरफ्तार किया गया है, जो धोखा देकर गरीब मुस्लिम लड़कियों की शादी इन बूढ़े अरबों से करवाते थे। बताया जाता है कि इन धनवान अरबों को नगर के बड़े–बड़े होटलों में ठहराया जाता था। इसके बाद उन्हें गरीब मुस्लिम लड़कियों से मिलवाया जाता था। जो लड़की इन बूढों को पसन्द आती थी, उसका निकाह मोटी रकम लेकर इनसे करवा दिया जाता था। इस गिरोह में हैदराबाद का एक अन्य काजी भी शामिल है। उसे भी गिरफ्तार किया गया है। पुछताछ के दौरान मिली जानकारी के अनुसार इस गिरोह से सम्बन्धित नगर के विभिन्न गेस्ट हाउसों के मालिकों को भी हिरासत में लिया गया है क्योंकि वे भी इस काम में शामिल बताये जाते हैं। पुलिस कमिश्नर ने बताया कि अभी तक पुलिस ने ४८ दलालों और एक दर्जन काजियों का पता लगाया है, जो इस गिरोह से सम्बन्धित बताये जाते है। पुलिस के एसीपी मोहम्मद ताजुद्दीन अहमद ने पत्रकारों को बताया कि इस मामले में कई और लोगों की गिरफ्ताार की सम्भावना है। उन्होंने कहा कि इस घिनौने काम में क्योंकि लड़कियों के परिजनों ने भी दौलत कमाईं, इसलिए वे लिखित रूप में पुलिस को कोई शिकायत देने को तैयार नहीं हैं।

अखबार के दि. २४ सितम्बर के अंक के अनुसार महिला शरिया कमेटी की प्रमुख आसमां जाहिरा ने कहा कि मासूम बच्चियों के साथ वृद्ध शेखों के निकाहों के लिए उनके परिवारजन और काजी जिम्मेवार हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह की घटनाओं का असली कारण गरीबी और जिहालत है। कहा गया है कि गरीबी के कारण कई दशकों से हैदराबाद के मुस्लिम माता–पिता अपनी बेटियों को पैसे कमाने के लिए बूढ़े अरबों के हाथ बेच रहे हैं। कुछ बदनियत काजी और उनके दलाल लालची माता–पिता के साथ मिलकर अपनी लड़कियों की दो महीने में तीन–तीन, चार–चार शादियाँ तक करवा रहे हैं। हालाँकि तलाक और खुला होने पर इद्दत की अवधि गुजारना बेहद जरूरी है। मगर पैसे कमाने के लालच में इन मुंसलमानों ने दीन को भुला दिया है। उन्होंने दावा किया है कि जिन छोटी उम्र की लड़कियों की अरब देशों के बूढों से शादी हो रही है, वह सिर्फ मोटी रकम कमाने के लिए की जा रही है। अरब गरीबी का अनुचित लाभ उठा रहे हैं। इस काम में काजी और दलाल की शामिल हैं। लेखक ने दावा किया कि ये निकाह पन्द्रह–पन्द्रह दिनों के लिए किये जा रहे हैं, जो कि अनुचित हैं। वर्ष २०१५ में एक ७२ वर्षीय अरब ने एक लाख रुपये देकर चौदह वर्षीय लड़की से निकाह किया था जो सिर्फ पन्द्रह दिन के लिए था। लेखक ने दावा किया कि निकाह के अवसर पर ही इन भोली–भाली लड़कियों से सादे कागज पर हस्ताक्षर करवा लिए जाते हैं। इन गरीब व अनपढ़ लड़कियों को यह पता ही नहीं होता कि जिन कागजों पर उन्होंने हस्ताक्षर किये या अँगूठा लगाया है वह निकाह या खुला का कागज है। क्या यह वेश्यावृत्ति का नया तरीका नहीं है? हैरानी की बात हैं कि इस तरह की शादियाँ करवाने की जो दलाली करते हैं, उसमें अधिकांश महिलाएँ भी शामिल हैं। यह सिलसिला १९६० से जारी है। फर्जी विवाह करवाने वाले लोगों का नेटवर्क सारे देश में फैला हुआ है।

अखकार मशरिक (१ अक्टूबर) के अनुसार हैदराबाद पुलिस ने एक नकली काजी को गिरफ्तार किया है, जिस पर दो सौ बोगस निकाह करवाने का अरोप है। पुलिस के अनुसार काजियों का एक गिरोह दलालों की मदद से बूढ़े अरबों से रिश्वत लेकर

शेष पृष्ठ 11 पर

अवधपुरी यह चरित प्रकाशा श्री मानसारंभ

साभार विनय पत्रिका

(पिछले अंक का शेष)

गोस्वामी जी पलटकर बोले, ''अरे भाई, मौन हम कहाँ हो रहे हैं, मौन तो इसी कारण से इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ हो रहे हैं। इन बिटिया–हरण कांडों ने ही सम्राट् से लेकर सुभटों तक सबको ठिकाने लगाकर दासता मोल ली, परन्तु वह तो कुमारियों के लिए झगड़े थे और अब तो विवाहितों के लिए पचड़े हो रहे हैं। तब सच्ची थालियों के लिए नदीदे झगड़ते थे, अब जूठी पत्तलें चाटने के लिए कुत्ते भड़क रहे हैं। ये चाँद–सितारे वाले हरे झंडे इसी के तो प्रतीक हैं।''

''क्यों व्यर्थ मुँह खुलवाते हो।''

''फिर भी।''

''फिर भी क्या, सुनना ही चाहते हो तो सुन लो। चंद्रमा गुरुपत्नी–गामी और बुध, उसी तारा के पाप से उत्पन्न जारज–पुत्र। एक का रंग और दूसरे का ढंग, इनका आदर्श और प्रतीक क्या अपितु कर्म–धर्म सबका परिचायक–उद्घोषक ही तो चाँद–सितारावाला यह हरा झंडा है। और समझना शेष रहता हो तो काबे के संगे असबद वे ही शिव जो सीयहर्ता–वेदवती घर्षण कर्ता–नलकुबेर की सेवा में जाती हुई रंभा के शीलहर्ता रावण के आराध्य हैं। शेष भागीरथी में स्नान करते ही समझ आ जाएगी, चलो।''

''कुछ–कुछ तो भागीरथी में स्नान से पूर्व ही समझ में आने लगा है।''

''बड़े पुण्यवान् हो जो स्नान क्या दर्शन से भी पूर्व गंतव्य पर पहुँच रहे हो।''

''ऐसा ही समझिए, अब जो समझे, सो आज्ञा हो तो कहें।''

''कहे बिना मानोगे नहीं, यह हम जानते हैं। आज्ञा की औपचारिकता, वह भी हो गई।''

''तो युग के चंद्रमा शहंशाह–ए–आजम जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर, तारा रानी बैरमखाँ की विधवा सलीमा बेगम अर्थात् पत्नी और बुध यह रहीम–''

''अरे, भागीरथी स्नान से पूर्व क्यों वैतरणी की कीच से उत्सादन कर रहे हो।''

''नहीं करेंगे, आपकी आज्ञा से होंठों पर–''

''हाँ, इस समय यही उचित है।'' गोस्वामी जी और उनके साथ माधवदास के गंगातट से लौटने से पूर्व राजा टोडरमल तो आ चुके थे। कुछ ही देर में होलराय भी आ गए। संकटमोचन–परिसर में ही शिवरात्रि–पूजन का कार्यक्रम आरंभ हो गया।

दो–तीन दिन में सभी अभ्यागत अपनी–अपनी योजनानुसार विदा होकर अपने–अपने गंतव्य की ओर चल पड़े। गोस्वामी जी गंभीर चिंतन में मग्न रहने लगे। फागोत्सव के तीन–चार दिन पश्चात् वे माई से मिलकर, टोडरमल को संकटमोचन का दायित्व सौंपकर माधवदास के साथ अयोध्या की ओर चल दिए।

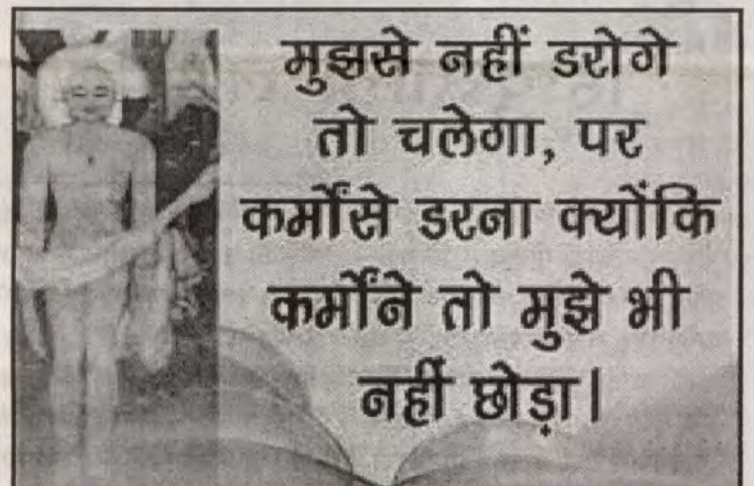

अभी वे काशी की सीमा में ही थे कि एक अत्यन्त सुंदर गौरवर्ण का किशोर उनके सामने आकर बोला, ''तुलसी! हमारी वाराणसी से हमारे प्रभु की पुरी अयोध्या जा रहे हो। बहुत उत्तम, किन्तु हमसे विदाई लिए बिना ही चल पड़े।'' तुलसी जब तक कुछ कहते कि तब तक वे उनके मस्तक पर भस्म लेपन कर, रुद्राक्षमाला पिन्हा कर जा चुके थे। जिस दिशा में वे गए, गोस्वामी जी की दृष्टि उस ओर फिरी किन्तु दूर–दूर तक कोई मनुष्य क्या पशु–पक्षी भी नहीं दिखा। वे समझ गए कि स्वयं भगवान् विश्वनाथ के अतिरिक्त वह विप्रकुमार अन्य कोई नहीं हो सकता। जहाँ खड़े होकर उन्होंने तिलक लगाया था, वे उस स्थान की रज को अपने अंग–प्रत्यंग पर लेपन करते हुए, एक अनिर्वचनीय आनंद में झूमते हुए बढ़ चले।

अभी वे कुछ ही पग चले होंगे कि पीछे से माधवदास का स्वर सुनाई पड़ा, ''हे महाराज, एक यह माधो भी आपके साथ है। तनिक रुककर इसकी भी सुध ले लो। पाप नहीं लगेगा।'' सुनते ही गोस्वामी जी ने पीछे की ओर मुड़कर देखा कि माधवदास लँगड़ाते हुए आ रहे है। वे तुरंत पीछे की ओर लौटे। देखा कि बाएँ पैर में से कुछ रक्त की बूँदें टपाटप टपक रही हैं। वे बोले, ''यह क्या हुआ?''

''हुआ क्या, आप तो ऐसे भागे जा रहे हैं अयोध्या कहीं भागनेवाली है कि काशी भाग कर चिपटनेवाली है। महाराज, साथ लिया है तो साथ चलो।''

''अरे भाई, बताओ तो सही यह क्या हुआ?''

''बस, इतना ही समझिए कि सब कुछ होने वाला था और इतना ही होकर रह गया। सूली का सूल काशी महारानी ने विदा करते–करते बना दिया।''

''क्या अर्थ?''

''अर्थ क्या, हम सीमा पर काशी महारानी को समर्पित करने के लिए दो पुष्प लेने लगे। सो एक काँटा ऊँच्च से तलुवे में धँस गया। उसे बैठकर निकालने लगे कि सामने वासुकी महाराज फन फैलाकर आ बैठे। आँखें चमचमा कर लगे जीभ लपलपाने। हम सोचने लगे 'आ गई बैठे–बिठाए, काशी करवट की वेला, लगे विश्वनाथ जपने। आपको पुकारते तब, जब शब्द कंठ कुठरिया से निकल पाते। रक्त रिसता रहा, काँटा कसकता रहा किन्तु किसे पता यहाँ तो कालदेव के प्रत्यक्ष दर्शन से रिसन और चुभन दोनों से नितांत अपरिचित बनाकर, अपने चिरपरिचित की भाँति अपने भुजंगाभूषण के विभूषण को निरन्तर ताकने का एक सूत्री कार्यक्रम आरंभ किया हुआ था।'

''फिर क्या, आपके दर्शन भाग्य में थे अतः महाराज कुछ समय प्राण वरण की लीला दिखाकर, प्राणदाता के समान बाँबी में पधार गए। चेतना आई तो साथ वेदना लाई। उसे सहते–सहते आपको पुकारते–पुकारते चले आ रहे हैं।''

''बैठो, हम काँटा निकालते हैं।''

''ठीक है, यह कहिए कि– माधो, तेरा काँटा निकाल कर, तेरे नरक प्रवेश का मार्ग निष्कंटक करते हैं। अरे महाराज, हम आपसे अपना पैर छुआएँगे तो उससे पूर्व मर न जाएँगे? आप तो कुछ क्षण ठहर जाइए। काँटा आपके निकाले नहीं निकलेगा, आपकी कृपा दृष्टि से निकलेगा।'' कहते हुए माधवदास ने एक और काँटे से तनिक कुरेदकर ज्यों ही उसे खींचा कि रक्त बिंदु रक्त–सरिता बनकर बह निकले।

कमण्डलु के जल से घाव धोकर, मिट्टी भरकर पट्टी बाँधकर चल पड़े। कुछ ही पग पर माधवदास के बड़बड़ाने के से शब्द गोस्वामी के कानों में पड़ने लगे। वे धीरे से रुक कर बोले, ''माधवदास, क्या बात है?''

''बात क्या है, कैसी स्वार्थी दुनिया है। कैसे–कैसे निर्लज्ज –कृतघ्नी साधु का वेष बनाए इस काशी में पड़े हैं। सामने 'जी–जी' पीठ फिरती देखें तो 'छीः–छी', लुच्चे कहीं के''

''माधो, यह किसकी स्तुति कर रहे हो''

''आपके जायों के अतिरिक्त इस माधो से कौन अपनी स्तुति करा सकता है?''

''तो हमारे किस जाये की स्तुति कर रहे हो।''

''आपके उस दत्तक सुपुत्र की कर रहा हूँ जिसने आपकी पीठ फिरने के साथ ही तोते जैसी आँख फेर ली।''

''उसका नाम तो कहो।''

''नाम सुन कर आप क्या करेंगे?''

''अरे, क्या करेंगे, क्या नहीं करेंगे, यह विषय तो बाद का है, पहले नाम तो बताओ।''

''नाम, तो नाम भी सुन लीजिए। उस पामर का नाम है राजा टोडर–टोडर–टोडरमल।''

''माधो, नहीं–नहीं, हमारे टोडर राजा के लिए पामर जैसे शब्द मत कहो, ऐसा उसने किया ही क्या है?''

''उसने, उसने हमारी आँखों में धूल झोंकी है और पीठ में छुरी भोंकी है।''

''कैसे भी बतनाना पड़ेगा, तो सुनिए–इतने रथ–गाड़ी खड़े थे, उनमें से किसी के द्वारा वह हमें अयोध्या नहीं भेज सकता था?''

''भैया, वह हड़बड़ी में भूल गया होगा।''

''वह भूल से कोई ग्रास मुँह के स्थान पर नाक या आँख में तो नहीं देते देखा कभी, यहाँ ही, हमारे लिये ही भूल सँवारकर–सँजोकर रखी हुई थी, सो हमें सश्रद्धा अर्पित कर दी। आप धन्य और वह धन्यातिधन्य। अतः हम ठहरे अन्य। ठीक है, चलिए।''

अभी ये चर्चा हो ही रही थी कि बैलों के गले में पड़ी हुई घंटियों की सी ध्वनि कानों में पड़ने लगी और धीरे–धीरे वह निकट आती हुई प्रतीत भी होने लगी। आधी घड़ी के व्यतीत होने से पूर्व ही अनेक बार की जानी –पहचानी राजा टोडरमल की बहली स्पष्ट दिखने लगी। दोनों ही मार्ग से हटकर खड़े हो गए। बहली के सामने आकर रुकने से पूर्व ही टोडर राजा के दोनों बड़े कुँवर उसमें से कूदकर गोस्वामी जी के चरणों में लोटते हुए क्षमा याचना के स्वर में कहने लगे कि, ''आप संकटमोचन के द्वार के पास ही होंगे कि पिता जी आपकी कुटिया में यह देखने गए कि कोई आवश्यक वस्तु छूट तो नहीं गई। देखभाल कर वे ज्यों ही मुड़े कि देखा, एक नाग महाराज फन फैलाए कुटिया के द्वार पर डटे हुए हैं। सेवक फटकारने के लिए लाठी–डंडा लेने जाने लगे किन्तु पिता जी बोले, ''यह तो गोस्वामी जी की रक्षा के लिए विश्वनाथ जी ने अपना कोई गण अपने आभूषण, की छवि में भेजा है। दूध के कटोरे से इनकी अभ्यर्थना करो। सेवक दूध ले आए और वे भी उसे पीकर पधार गए। पिता जी ने बाहर आते ही आपको देखने के लिए दो सेवक दौड़ाए परन्तु आप निकल चुके थे। अतः उन्होंने घर से कुछ पक्वान–फलादि और गंगा जी के जल का कलश मँगाकर हमें तुरंत भेजा। उन मणियल जैसे नाग के कारण संकटमोचन गुरुकुल के विद्यार्थियों क्या आचार्यों में भी भय व्याप्त हो गया था। अर्चकों और शेष सेवादारों की भी यही स्थिति थी। अतः उसकी निवृत्ति के लिए उन्हें वहाँ रुकना ही पड़ा। उन्होंने क्षमा याचना करते हुए कहा है कि आपकी सेवा में हमसे जो चूक हुई, विलंब के कारण आपको जो कष्ट हुआ, उसके कारण वे लज्जित हैं। आप–''

दोनों कुँवरां के कंधे थपथपाते हुए गोस्वामी जी बोले, ''अरे लाडलो! यह सब भगवान् विश्वनाथ की लीला मानो, संकोच छोड़ो' 'कहते हुए वे माधवदास के साथ बहली में बैठ गए। टोडरमल के पुत्र उन्हें प्रणाम करके लौटने लगे तो माधवदास बोले, ''भैयाओं! हमार ओर सों टोडर भैया सों छमा माँगि लइहौं और कारन कहिंगे नाहिं, तुम पूछिहौं हूँ नाँहि। बस्स, जाव। बाबा बिस्वनाथ, मैया अन्नपूर्णा तुम पै प्रसन्न रहें।'' बहली चल पड़ी। गोस्वामी जी गुनगुनाने लगे–

देव बड़े, दाता बड़े, संकर बड़े भोरे।
किए दूर दुख सबनिके, जे-जे कर जोरे।।
सेवा-सुमिरन-पूजिबौ, दल-आखत थोरे।
दिये जगत जहँ लगि सबै, सुख गज-रथ-घोरे।।

समाप्त

महाराणा प्रताप जयन्ती (१६ जून २०१८) पर विशेष

अकबर की साम्राज्य वादी वासना एक–एक करके भारत के समस्त राज्यों को निगल रही थी। अकबर की विशाल सैन्य शक्ति के भय से राजपूतों ने युद्ध करने की अपेक्षा उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी। इतना ही नहीं, महाराणा के भाई भी अकबर के साथ मिल गये थे। जो राजपूत अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए मर–मिट जाते थे तथा जो राजपूत कन्याएँ अपवित्रात्माओं की वासनामय दृष्टि से बचने के लिये अपने प्राणों का उत्सर्ग कर देती थीं, आज उन्हीं राजपूतों एवं उनकी कन्याओं को अकबर की अधीनता में देखकर महाराणा की रगों का राजपूताना रक्त उबल पड़ता था। महाराणा के पास अकबर ने अपने अधीन हुए राजपूत राजा मानसिंह को यह समझाने के लिए भेजा कि वह भी हमारी अधीनता स्वीकार कर लें। मानसिंह को विश्वास था कि महाराणा उसका स्वागत करेंगे, परन्तु घटना इसके विपरीत घटी। मानसिंह के मुँह से अकबर की अधीनता स्वीकार करने की बात सुनकर महाराणा प्रताप आग बबूले हो उठे और उन्होंने मानसिंह के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। महाराणा ने कहा, "मैं अकबर की अधीनता स्वीकार करने की अपेक्षा युद्धभूमि में मर जाना पसन्द करता हूँ।" जब भोजन का समय हुआ तो महाराणा ने मानसिंह के लिए भोजन की व्यवस्था कर दी परन्तु स्वयं उसके साथ भोजन नहीं किया। मानसिंह ने जब महाराणा से पूछा कि "एक राजपूत होने पर भी आप मेरे साथ भोजन क्यों नहीं करते?" महाराणा ने उत्तर दिया, "जिसने अपनी बहन–बेटियों की इज्जत विधर्मियों के हाथ बेच दी हो, वह राजपूत नहीं बल्कि घराने पर लगा कलंक है, कायर है और महाराणा ऐसे गुलाम के साथ बैठकर भोजन नहीं कर सकता। फिर भी आप राजपूत कुल में जन्में हो इसलिए आपका इतना सम्मान किया गया है अन्यथा आप महाराणा के किले के भीतर प्रवेश भी नहीं कर सकते थे।" महाराणा के इन शब्दों ने मानसिंह को लज्जित कर दिया। इस घोर अपमान का घूँट पीते हुए उसने कहा, "महाराणा! यह आपने अच्छा नहीं किया! मानसिंह इस अपमान का बदला जल्दी लेगा। आपको शीघ्र ही मेरी शक्ति का पता लग जायेगा। महाराणा जानते थे कि मानसिंह अकबर की विशाल सेना का सेनापति है। उसका सम्मान न करना उनके लिए खतरनाक साबित हो सकता है, परन्तु अपनी संस्कृति तथा धर्म के अडिग पुजारी महाराणा ने इसकी कुछ भी परवाह नहीं की।

उन्होंने मानसिंह की धमकी का उत्तर देते हुए कहा, "यदि आप राजपूती सेना लेकर आयेंगे तो महाराणा आपके स्वागत के लिये आयेगा और यदि मुगल सेना लेकर आये तो महाराणा हाथ में तलवार लेकर आपसे युद्ध करने आयेगा।"

अंततः वही हुआ। अकबर की विशाल सेना के साथ मुकाबला करते रहे अन्त में विवश होकर महाराणा को अपने परिवार सहित जंगलों एवं पहाड़ों में भटकना पड़ा। विधाता के रंग निराले हैं। कई दिनों की भूख से राणा की बेटी बिलबिला उठी। राणा की पत्नी ने बड़ी कठिनाई से घास की रोटी बनाई। समय की मार, एक जंगली बिलाउ वहां आया और वह रोटी भी उठाकर ले गया।

महाराणा प्रताप उदयपुर, मेवाड़ में शिशोदिया राजवंश के राजा थे। वह तिथि धन्य है, जब मेवाड़ की शौर्य–भूमि पर मेवाड़–मुकुट मणि प्रताप का जन्म हुआ। उनका नाम इतिहास में वीरता और दृढ़ प्रण के लिये अमर है। उन्होंने कई वर्षों तक मुगल सम्राट अकबर के साथ संघर्ष किया। इनका जन्म राजस्थान के कुम्भलगढ़ में महाराणा उदयसिंह एवं माता राणी जीवत कँवर के घर हुआ था। महाराणा प्रताप को बचपन से ही अच्छे संस्कार, अस्त्र–शस्त्रों का ज्ञान और धर्म की रक्षा की प्रेरणा अपने माता–पिता से मिली। उन दिनों दिल्ली में सम्राट अकबर का राज था जो भारत के सभी राजा–महाराजाओं को अपने अधीन कर मुगल साम्राज्य का ध्वज फहराना चाहता था। मेवाड़ की भूमि को मुगल आधिपत्य से बचाने हेतु महाराणा प्रताप ने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक मेवाड़ आजाद नहीं होगा, मैं महलों को छोड़ जंगलों में निवास करूंगा, स्वादिष्ट भोजन को त्याग कंद मूल से ही पेट भरूंगा। किन्तु, अकबर का अधिपत्य कभी स्वीकार नहीं करूंगा। १५७६ में हल्दीघाटी में महाराणा प्रताप और अकबर के बीच ऐसा युद्ध हुआ जो पूरे विश्व के लिए आज भी एक मिसाल है। अभूतपूर्व वीरता और मेवाड़ी साहस के चलते मुगल सेना के दांत खट्टे कर दिये और अकबर के सैकड़ों सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया गया। बालक प्रताप जितने वीर थे, उतने

ही पितृ भक्त थे। पिता राणा उदयसिंह अपने कनिष्ठ पुत्र जगमल को बहुत प्यार करते थे। इसी कारण वे उसे राज्य का उत्तराधिकारी घोषित करना चाहते थे। रामायण के प्राण, भगवान श्रीराम के राज्य त्याग व वनवास के आदर्श के सदा पुजारी रहे महाराणा प्रताप ने पिता के इस निर्णय का तनिक भी विरोध नहीं किया। उनके मन में बाल्यावस्था से ही सदा यही बात खटकती थी कि भरत भूमि विदेशियों की दासता की बेड़ियों में सिसक रही है। स्वदेश मुक्ति की योजना में वे सदा चिंतनशील रहते थे। कभी–कभी बालक प्रताप महाराणा कुंभ के विजय स्तम्भ की परिक्रमा कर मेवाड़ की धूलि मस्तक पर लगा, कहा करते थे, 'मैंने वीर क्षत्राणी का दुग्ध पान किया है। मेरे रक्त में राणा सांगा का ओज प्रवाहित है। चित्तौड़ के विजय स्तम्भ! मैं तुमसे स्वतंत्रता और मातृ–भूमि भक्ति की शपथ लेकर कहता हूं कि तुम सदा उन्नत और सिसौदिया गौरव के विजय प्रतीक बने रहोगे। शत्रु तुम्हें अपने स्पर्श से मेरे रहते अपवित्र नहीं कर सकेंगे।' जंगल–जंगल भटकते हुए तृण–मूल व घास–पात की रोटियों में गुजर–बसर कर पत्नी व बच्चे को विकराल परिस्थितियों में अपने साथ रखते हुए भी उन्होंने कभी धैर्य नहीं खोया। पैसे के अभाव में सेना के टूटते हुए मनोबल को पुर्नजीवित करने के लिए दानवीर भामाशाह ने अपना पूरा खजाना समर्पित कर दिया। तो महाराणा प्रताप ने कहा कि सैन्य आवश्यकताओं के अलावा मुझे आपके खजाने की एक पाई भी नहीं चाहिए। राजपूताने की वह पावन बलिदान–भूमि के समान विश्व में इतना पवित्र बलिदान स्थल कोई नहीं। इतिहास के पृष्ठ रंगे हैं उस शौर्य एवं तेज की भव्य गाथा से। भीलों का अपने देश और नरेश के लिये सह अमर बलिदान, राजपूत वीरों की वह तेजस्विता और महाराणा का वह लोकोत्तर पराक्रम इतिहास में वीरकाव्य का वह मूलरूप है। मेवाड़ के उष्णरक्त ने श्रावण संवत १६३३ वि० में हल्दीघाटी का कण–कण लाल कर दिया। अपार शत्रु सेना के सम्मुख थोड़े से राजपूत और भील सैनिक कब तक टिकते? महाराणा को पीछे हटना पड़ा और उनका प्रिय अश्व चेतक–उसने उन्हें निरापद पहुँचाने में इतना श्रम किया कि अन्त में वह सदा के लिये अपने स्वामी के चरणों में गिर पड़ा। दिल्ली का उत्तराधिकारी, युवराज सलीम मुगल सेना के साथ युद्ध के लिए चढ़ आया। उसके साथ राजा मानसिंह और सागरजी का जाति भ्रष्ट पुत्र मोहबत खाँ भी था। प्रताप ने अपने पर्वतों और बाईस हजार राजपूतों में विश्वास रखते हुए अकबर के पुत्र का सामना किया। अरावली के पश्चिम छोर तक सेना को किसी प्रकार के विरोध का सामना नहीं करना पड़ा, परन्तु इसके आगे का मार्ग प्रताप के नियन्त्रण में था। प्रताप अपनी नई राजधानी के पश्चिम की ओर पहाड़ियों में आ डटा। इस इलाके की लम्बाई लगभग अस्सी मील थी और इतनी ही चौड़ाई थी। सारा इलाका पर्वतों और वनों से घिरा हुआ है। बीच–बीच में कई छोटी–छोटी नदियाँ बहती हैं। राजधानी की तरफ जाने वाले मार्ग इतने तंग और दुर्गम हैं कि बड़ी कठिनाई से दो गाड़ियां आ–जा सकती हैं। उस स्थान का नाम हल्दीघाटी है। जिसके द्वार पर खड़े पर्वत को लाँघकर उसमें प्रवेश करना संकट को मोल लेना है। उनके साथ विश्वासी भील लोग भी धनुष और बांण लेकर डट गए। भीलों के पास बड़े–बड़े पत्थरों के ढेर पड़े थे, जैसे ही शत्रु सामने से आयेगा वैसे ही पत्थरों को लुढ़काकर उनके सिर को तोड़ने की योजना थी। हल्दीघाटी के इस प्रवेश द्वार पर अपने चुने हुए सैनिकों के साथ प्रताप शत्रु की प्रतीक्षा करने लगा। दोनों ओर की सेनाओं का सामना होते ही भीषण रूप से युद्ध शुरू हो गया और दोनों तरफ के शूरवीर योद्धा घायल होकर जमीन पर गिरने लगे। प्रताप अपने घोड़े पर सवार होकर द्रुतगति से शत्रु की सेना के भीतर पहुँच गया और राजपूतों के शत्रु मानसिंह को खोजने लगा। वह तो नहीं मिला परन्तु प्रताप उस जगह पर पहुँच गया जहाँ पर सलीम अपने हाथी पर बैठा हुआ था। प्रताप की तलवार से सलीम के कई अंगरक्षक मारे गए और यदि प्रताप के भाले और सलीम के बीच में लोहे की मोटी चादर वाला हौदा नहीं होता तो अकबर अपने उत्तराधिकारी से हाथ धो बैठता। प्रताप के घोड़े चेतक का एक उठा हुआ पैर और प्रताप के भाले द्वारा महावत का छाती का छलनी होना अंकित किया गया है। महावत के मारे जाने पर घायल हाथी सलीम सहित युद्ध भूमि से भाग खड़ा हुआ। इस समय युद्ध अत्यन्त भयानक हो उठा था। सलीम पर प्रताप के आक्रमण को देखकर असंख्य मुगल सैनिक उसी तरफ बढ़े और प्रताप को घेरकर चारों तरफ से प्रहार करने लगे। प्रताप के सिर पर मेवाड़ का राजमुकुट लगा हुआ था। इसलिए मुगल सैनिक उसी को निशाना बनाकर वार कर रहे थे। राजपूत सैनिक भी उसे बचाने के लिए प्राण हथेली पर रखकर संघर्ष कर रहे थे। परन्तु धीरे–धीरे प्रताप संकट में फँसता जा

शेष पृष्ठ 10 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

शेष पृष्ठ 5 का
गो सेवा से सब कुछ.....

यह दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पैंसठ वर्षों के बाद भी गो–वध पूर्ण रुपेण प्रतिबंधित नहीं है। देश के गो–भक्तों को सत्याग्रहों, उपवासों और आंदोलनों का आश्रय लेना पड़ रहा है। जनता–जनार्दन का यह आग्रह कदाचित् नीति–नियन्ताओं की आँखे खोल सके।

दूध पिलाती है जीव जो, साथ नहीं उसके छल-छन्द हो।
है जिसकी हर श्वास परार्थ, न दे दुख कोई उसे मतिमंद हो।
पूज्य है जो जननी के समान, नहीं उसके हित घातक फन्द हो।
देश की है ये पुकार अमन्द, कि गोवध बन्द हो, गोवध बन्द हो।।

शेष पृष्ठ 7 का
बूढ़े शेखों के लिए सज.....

उनसे तेलंगाना की किशोरियों का निकाह करवाता है। पुलिस की जानकारी के अनुसार इस काजी को पिछले तीन वर्ष के दौरान वक्फ बोर्ड ने कोई निकाह का फॉर्म जारी नही किया। इसके बावजूद इस काजी ने दो सौ से अधिक मुस्लिम बच्चियों की शादी बूढ़े अरबों से करवाई है।

मुंसिफ (२७ सितम्बर) पत्र के अनुसार हैदराबाद पुलिस ने अरब नागरिकों के साथ घोटाले के सिलसिले में छह अन्य व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है। इनमें ओमान के तीन नागरिक काजी और दो दलाल भी शामिल हैं। पुलिस उपायुक्त सत्यनारायण ने संवाददाताओं को बताया कि पुलिस ने एक सत्तर वर्षीय ओमान नागरिक अल शतादी सुलेमान को गिरफ्तार किया है। उसे एक दलाल मोहम्मद खल्फान अपने साथ ओमान से लड़कियों से शादी करवाने के लिए लाया था। उन्होंने कहा कि इससे पूर्व भी यह दलाल कई बूढ़े अरबों की शादी बालिकाओं से करवा चुका है। पुलिस ने एक ५७ वर्षीय नेत्रहीन ओमानी नागरिक अब्दुल्ला मुबारक को गिरफ्तार किया, जो इससे पूर्व हैदराबाद में दस लड़कियो से निकाह कर चुका है। इन ओमानी नागरिकों से पूछताछ के बाद पुलिस ने सदर काजी अली अब्दुल्ला रफाई को भी गिरफ्तार किया है। जो दलालो की सहायता से बूढ़े अरबों से तेलंगाना की लड़कियों का निकाह करवाया करता था। पुलिस इससे पूर्व भी पाँच लोगों को गिरफ्तार कर चुकी है, जो इस गिरोह से सम्बन्धित बताये जाते हैं। सत्यनारायण ने कहा कि जिन परिवारों ने अपनी लड़कियों की शादी इन बूढ़ों से की है, वे पुलिस में शिकायत करने को तैयार नहीं हैं, इसलिए उन्होंने विदेश मंत्रालय से अनुरोध किया है कि ओमान के रहने वाले इन अरबों को भारत से निष्कासित कर दिया जाये। ज्ञातव्य है कि अब तक पच्चीस लोगों को पुलिस गिरफ्तार कर चुकी है, जिनमें बारह अरब, चार मुस्लिम काजी, पाँच दलाल भी शामिल हैं। गिरफ्तार किये गये अरबों का सम्बन्ध अरब, ओमान और कतर से है। ज्ञातव्य है कि इस गिरोह का पर्दाफाश दो महीने पहले हुआ था जब एक सत्तर वर्षीय बूढ़े ने दो लाख रुपये देकर एक सोलह वर्षीय लड़की से निकाह किया था। यह निकाह क्योंकि इस लड़की की माँ की जानकारी में नहीं हुआ था, इसलिए उसने इस सम्बन्ध में पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करवाई थी। पुलिस जाँच से इस गिरोह का पर्दाफाश हुआ है।

दैनिक सियासत (२७ सितम्बर) के अनुसार जिन चार काजियों को गिरफ्तार किया गया, उनमें एक काजी मुम्बई का रहने वाला है। सत्यनारायण ने बताया कि एक काजी इब्राहिम शरीफ निकाह करवाते ही लड़कियों से तलाक और खुला के कागजों पर पहले ही हस्ताक्षर करवा लिया करता था।

श्री महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग

महापावन उज्जैनी (मध्यप्रदेश) नगरों में शिप्रा नदी के तट पर भगवान श्री महाकालेश्वर भगवती शक्ति के साथ बिराजमान है। प्रत्येक जीव काल (समय) के अधीन है। अर्थात् हमारा सबका जीवन स्थल –काल के मर्यादा से परिमित है। परंतु भगवान शिव तो स्वयं महाकाल है। जो जीव को संसार के बंधनों से मुक्त करके मोक्ष प्रदान करमे है। आइए, भगवान अर्धनारीश्र्वर का दर्शन करें। शिव और शक्ति का नितांत सायुज्य है। शिव ज्ञान स्वरूप है और शक्ति ऊर्जा स्वरूपा है। ज्ञान और ऊर्जा के समुचित उपयोग से कल्याण होता है। लौकिक जगत में प्रत्येक पुरुष शिव स्वरूप है एवँ प्रत्येक स्त्री शक्ति स्वरूपा है। दोनों में बिराजमान परमात्मा के इन दिव्य गुणों का समन्वय करके दामपत्य जीवन को पूर्णकाम बनायें। पौराणिक कथाओं में से हमारे व्यवहारिक जीवन को सुखी समृद्ध बनाने के लिए बड़े ही रोचक बोध प्राप्त होते है। शिव–शक्ति के इस दिव्य रूपक के दर्शन के द्वारा पति और पत्नी स्वरूप संसार रथ के दोनों पहिओं को सुचारु रूप से जोड़ते हुए परम कल्याण के मार्ग पर प्रस्थान करें।

शेष पृष्ठ 9 का
महाराणा प्रताप जयन्ती......

रहा था। स्थिति की गम्भीरता को परखकर झाला सरदार ने स्वामिभक्ति का एक अपूर्व आदर्श प्रस्तुत करते हुए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। झाला सरदार मन्नाजी तेजी से आगे बढ़े और प्रताप के सिर से मुकुट उतार कर अपने सिर पर रख लिया और तेजी के साथ कुछ दूरी पर जाकर घमासान युद्ध करने लगा। मुगल सैनिक उसे ही प्रताप समझकर उस पर टूट पड़े और प्रताप को युद्ध भूमि से दूर निकल जाने का अवसर मिल गया। उसका सारा शरीर अगणित घावों से लहूलुहान हो चुका था। युद्धभूमि से जाते–जाते प्रताप ने मन्नाजी को मरते देखा। राजपूतों ने बहादुरी के साथ मुगलों का मुकाबला किया, परन्तु मैदानी तोपों तथा बन्दूकधारियों से सुसज्जित शत्रु की विशाल सेना के सामने समूचा पराक्रम निष्फल रहा। युद्धभूमि पर उपस्थित बाईस हजार राजपूत सैनिकों में से केवल आठ हजार जीवित सैनिक युद्धभूमि से किसी प्रकार बचकर निकल पाये। प्रताप ने प्रतीज्ञा की थी कि वह 'माता के पवित्र दूध को कभी कलंकित नहीं करेगा।' इस प्रतिज्ञा का पालन उसने पूरी तरह से किया। कभी मैदानी प्रदेशों पर धावा मारकर जन–स्थलों को उजाड़ना तो कभी एक पर्वत से दूसरे पर्वत पर भागना और इस विपत्ति काल में अपने परिवार का पर्वतीय कन्दमूल फल द्वारा भरण–पोषण करना ओर अपने पुत्र अमर का जंगली जानवरों और जंगली लोगों के मध्य पालन करना अत्यन्त कष्टप्रद कार्य था। इन सबके पीछे मूल मंत्र यही था कि बप्पा रावल का वंशज किसी शत्रु अथवा देशद्रोही के सम्मुख शीश झुकाये–यह असम्भव बात थी। कायरों के योग्य इस पापमय विचार से ही प्रताप का ह्रदय टुकड़े–टुकड़े हो जाता था। इस प्रकार, समय गुजरता गया और प्रताप की कठिनाइयाँ भयंकर बनती गई। पर्वत के जितने भी स्थान प्रताप और उसके परिवार को आश्रय प्रदान कर सकते थे, उन सभी पर बादशाह का अधिकार हो गया। राणा को अपनी चिन्ता न थी, चिन्ता थी तो बस अपने परिवार की ओर से छोटे–छोटे बच्चों की। वह किसी भी दिन शत्रु के हाथ में पड़ सकते थे। एक दिन तो उसका परिवार शत्रुओं के पँन्जे में पहुँच गया था, परन्तु कावा के स्वामिभक्त भीलों ने उसे बचा लिया। भील लोग राणा के बच्चों को टोकरों में छिपाकर जावरा की खानों में ले गये और कई दिनों तक वहीं पर उनका पालन–पोषण किया। भील लोग स्वयं भूखे रहकर भी राणा और परिवार के लिए खाने की सामग्री जुटाते रहते थे। जावरा और चावंड के घने जंगल के वृक्षों पर लोहे के बड़े–बड़े कीले अब तक गड़े हुए मिलते हैं। इन कीलों में बांधी गई बड़े–बड़े टोकरे टाँग कर उनमें राणा के बच्चों को छिपाकर वे भील राणा की सहायता करते थे। इससे बच्चे पहाड़ों के जंगली जानवरों से भी सुरक्षित रहते थे। इस प्रकार की विषम परिस्थिति में भी प्रताप का विश्वास नहीं डिगा। अकबर ने भी इन समाचारों को सुना और पता लगाने के लिए अपना एक गुप्तचर भेजा। वह किसी तरकीब से उस स्थान पर पहुँच गया जहाँ राणा और उसके सरदार एक घने जंगल के मध्य एक वृक्ष के नीचे घास पर बैठे भोजन कर रहे थे। खाने में जंगली फल, पत्तियाँ और जड़ें थीं परन्तु सभी लोग उस खाने को उसी उत्साह के साथ खा रहे थे जिस प्रकार कोई राजभवन में बने भोजन को प्रसन्नता और उमंग के साथ खाता हो। गुप्तचर ने किसी चेहरे पर उदासी और चिन्ता नहीं देखी । उसने वापस आकर अकबर को पूरा वृत्तान्त सुनाया। सुनकर अकबर का ह्रदय भी पसीज गया और प्रताप के प्रति उसमें मानवीय भावना जागृत हुई। उसने अपने दरबार के अनेक सरदारों से प्रताप के तप, त्याग और बलिदान की प्रशंसा की। अकबर के विश्वासपात्र सरदार खानखाना ने भी अकबर के मुख से प्रताप की प्रशंसा सुनी थी। उसने अपनी भाषा में लिखा, इस संसार में सभी नाशवान हैं। राज्य और धन किसी भी समय नष्ट हो सकता है, परन्तु महान् व्यक्तियों की ख्याति कभी नष्ट नहीं हो सकती। राजपुतों ने धन और भूमि को छोड़ दिया, परन्तु उसने कभी अपना सिर नहीं झुकाया। हिन्द के राजाओं में वही एकमात्र ऐसा राजा है, जिसने अपनी जाति के गौरव को बनाए रखा है। परन्तु कभी–कभी ऐसे अवसर या उपस्थित होते, जब अपने प्राणों से भी प्यारे लोगों को भयानक आवाज से ग्रस्त देखकर वह भयभीत हो उठता । उसकी पत्नी किसी पहाड़ी या गुफा में भी असुरक्षित थी और उसके उत्तराधिकारी जिन्हें हर प्रकार की सुविधाओं का अधिकार था, भूख से बिलखते उसके पास आकर रोने लगते। मुगल सैनिक इस प्रकार उसके पीछे पड़ गए थे कि भोजन तैयार होने पर कभी कभी खाने का अवसर न मिलता था और सुरक्षा के लिए भोजन छोड़कर भागना पड़ता था। एक दिन तो पाँच बार भोजन पकाया गया और हर बार भोजन को छोड़कर भागना पड़ा। एक अवसर पर प्रताप की पत्नी और उसकी पुत्र–वधु ने घास के बीजों को पीसकर कुछ रोटियाँ बनाई। उनमें से आधी रोटियाँ बच्चों को दे दी गई ओर बची हुई आधी रोटियाँ दूसरे दिन के लिए रख दी गई। इसी समय प्रताप को अपनी लड़की की चिल्लाहट सुनाई दी। एक जंगली बिल्ली लड़की के हाथ से उसके हिस्से की रोटी को छीनकर भाग गई और भूख से व्याकुल लड़की के आँसू टपक आये। जीवन की इस दुरावस्था को देखकर राणा का ह्रदय एक बार विचलित होउठा। अधीर होकर उसने ऐसे राज्याधिकार को धिक्कारा जिसकी वजह से जीवन में ऐसे करुण दृश्य देखने पड़ें और उसी अवस्था में अपनी कठिनाइयों को दूर करने के लिए उसने एक पत्र के द्वारा अकबर से मिलने की माँग की।

अपनी मातृभूमि, संस्कृति एवं धर्म के प्रति ऐसे निष्ठावान थे वीर महाराणा प्रताप, जिनकी शौर्यगाथा से मेवाड़ की भूमि का कण-कण महक रहा है।

ऐसे पराक्रमी भारत माँ के वीर सपूत महाराणा प्रताप को उनके जन्म दिन पर राष्ट्र का शत् शत् नमन।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 6 का
पाकिस्तानी विधुत की नई.....

कुछ उत्तर रोनक देखते हैं। जन बेस्टर ने कुछ दिनो पहले नेशनल ज्याग्राफिक के सितम्बर २००७ के अंक में स्ट्रगलफार द सोल आफ पाकिस्तान शीर्षक से एक सचिव लेख लिखा था अपने अस्तित्व के छह दश्कों में ६/११ के न्यूयार्क के खोने के बाद इस्लाम द्वारा पाकिस्तान में बनी विभाजन रेखाएं कुछ जगह स्पष्ट थी इस जगह को इस्लामाबाद से १७ मील पश्चिम में मार्गल्ला दर्रा कहा जो पाकिस्तान ठीक बीच में उस जगह है इस पश्चिम का पर्वतीय भाग सिन्धु घाटी से मिलता है यह दो प्राचीन भिन्न सम्यताओ की ऐसी करनी है जहां दक्षिण पूर्व में दूर क्षितिज तक उपजाऊ भारतीय उपमहाद्वीप की जमीन फली है और दूसरी ओर पश्चिम व उत्तर में मध्य एशिया की दुर्गम पर्वत मालाएं है जहां से आक्रमणकारी दुर्दान्त घुड़सवार प्रवेश करते रहे है। लेखक के अनुसार यही विरोधाभासी इस्लाम के दो रूप मिलते है भारत की इस्लामी आस्था और अफगान सीमा का तत्ववादी विश्वासों का रूप मैं दो अलग अलग दुनिया है जो आज के पाकिस्तान के भूतल के नीचे भूकम्प के झटको की तरह यह की जाती है। इस उथल-पुथल में पंजाबी, सिंधी बलूची पख्तून सभी शामिल हैं। इस्लामाबाद के सताधीशो से कभी कलात बलूची, पख्तून सभी शामिल है। इस्लामाबाद के सताधीशो से कभी कलात के खान कभी बुगती के नवाब या कभी स्वात में जिस पर विद्रोह भड़कता रहा है यह पाकिस्तान के घातक रोग के कुछ लक्षण मात्र हैं।

पाकिस्तान में इसके इतिहास के साथ साथ भूगोल की विभिन्नता ने भी टकराव पैदा करने में हाथ बलूचिस्तान के ईरान के निकट के ग्वादर, तुरन्त और जहां उसने आणविक समय रास कोह पवर्तमाला के निकट बनाए हैं वह एक अलग दुनियां हैं जिसका उसकी व दक्षिण वजीरिस्तान के मीसशाह था फेडरली एडिमिनिस्र्टड ट्राइवल एरियाज (फाटा) या सिन्ध अथवा पंजाब के शहरों से कोई मेल नहीं दीखता है। अनेक विशेषज्ञ मानते हैं कि ये अलग अलग दुनियाएं एक शासन के अन्दर कैसे बनी और चल रही हैं यह विस्मय की बात है। उदाहरण के लिए बलूचिस्तान में कलात के खान (मीर अहमद यार खान) कि सन १६४० में ही पाकिस्तान का का हिस्सा बने थे। १६५० में उन्होंने विद्रोह कर अपने को स्वतंत्र धोषित कर दिया था। उन्होंने अपना महल अंग्रेजी जहाज क्वीन मेरी के कई डेक या मजिल वाले भवन जैसा बनवाया था। महल के भीतर एक निजी मस्जिद भी थी जिसकी मीनार को पाकिस्तानी सेना ने संधर्ष के दौरान एक तोप के एक गोले से उडा दी थी। यदि अहमद खान को अपदस्थ करने के बाद भी वहाँ स्वतवेतादी आग जलती रही है। नवाब बुगती की हत्या की साजिश परवेज मुशर्रफ के कार्य काल में ही रची गई थी और अनेक विरुद्ध देशद्रोह के आरोप के मामले में यह भी एक बड़ा मुद्दा रहा है। पाकिस्तान में निरन्तर नेतृत्व का अभाव, सेना का अमेरिका के विरुद्ध बढ़ता आक्रोश पाकिस्तान के प्रति अमेरिका में अविश्वास की नही लहर और उसके पास नए विकल्पो का अभाव आज इन मुद्दों ने पाकिस्तान को फिर पूरी तरह असुरक्षित बना दिया है।

शेष पृष्ठ 1 का
भारत और अमेरिका मिलकर......

भी अन्य देशों के साथ काम करना बहुत अच्छी बात है। यह बुरी बात नहीं है, ट्रंप ने कहा कि उनकी नजर सेना को मजबूत बनाने, बड़ी मात्रा में तेल और गैस तथा ऊर्जा का भंडार करने पर है लेकिन रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को यह पसंद नहीं आ सकता। उन्होंने कहा कि यह बहुत ही बेहतर होगा कि उत्तर कोरिया से निपटा जाए जहां पर अमेरिका को अभी दिक्कत है। उन्होंने कहा यह मेरी दिक्कत नहीं होनी चाहिए थी। इसे वर्षों पहले ही हल किया जाना चाहिए था जब यह कम खतरनाक थी। लेकिन यह समस्या मुझे दी गई, ट्रंप ने पूर्व विदेश मंत्री हिलेरी क्लिंटन को इसके लिए जिम्मेदार ठहराते हुए कहा कि उन्होंने सेना को मजबूत नहीं बनाया। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र की श्री नरेन्द्र मोदी सरकार से कहा है कि विश्व समुदाय मिलकर आंतकवाद का पूर्ण सफाया करे। उसके लिये भारत सरकार को पहल करनी चाहिए। आंतकवाद एक विश्व व्यापी समस्या है इससे पूरा विश्व प्रभावित है इसलिए भारत के साथ मिलकर विश्व समुदाय आंतकवाद के सफाया के लिये साझा प्रयास करे।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 1 का
सुरंग के रास्ते घुसपैठ में कामयाब.....

पैड़ मौजूद हैं, जहां पर मौजूद आतंकी लगातार भारत में घुसपैठ करने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि रात्रि हाई सेंस्टिव थर्मल इमेजिंग के जरिए पांच आतंकियों को घुसपैठ करते हुए देखा गया था। उल्लेखनीय है कि इस घुसपैठ की कोशिश को नाकाम करने के लिए हुई गोलीबारी में बीएससएफ का कांस्टेबल देवेंद्र शहीद हो गया है। बीएसएफ के वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार भारत–पाक सीमा पर बीते छह सालों में बीएसएफ ने छह सुरंगों का पता लगाया है। पहली सुरंग २२ जुलाई २०१२ को सांभा सेक्टर के चिल्लिआंग पोस्ट के पास मिली थी। इसके बाद बीएसएफ ने ३ मार्च २०१६ को आरएसपुरा सेक्टर की अम्मा मईकोठी पोस्ट के करीब एक सुरंग को खोजा था। २८ नवंबर २०१६ को सांभा सेक्टर के फतवाल पोस्ट १४ फरवरी २०१७ को सांभा सेक्टर की एसएमपुर पोस्ट और ३० सितंबर २०१७ को सांभा सेक्टर के ही मुकेश पोस्ट के करीब बीएसएफ ने सुरंगों का पता लगाया था। सुरक्षा बल के वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार पाकिस्तानी सेना की मदद के बिना आतंकियों के लिए सुरंग बनाना मुमकिन नहीं है। अब तक जिस लंबाई और गहराई की सुरंगे भारत–पाक सीमा पर मिली है। उन्हें विशेष उपकरणों के बिना बनाना बेहद मुश्किल है, २२ सितंबर २०१२ को सांभा सेक्टर में मिली सुरंग का उदाहरण देते हुए अधिकारी ने बताया कि आतंकियों ने घुसपैठ करने के इरादे से २५ मीटर गहरी और करीब २०० मीटर लंबी सुरंग बनाई थी। २५ मीटर गहराई पर जाने के बाद समानांतर सुरंग खोदने के दौरान सांस लेने के लिए आक्सीजन उपकरणों की जरूरत पड़ेगी। इसके अलावा सुरंग को धंसने से रोकने के लिए सपोर्ट सिस्टम तैयार करना होगा, जो कि विशेष उपकरणों और औजारों के बिना संभव नहीं है। वहीं सुरंग खोदने के लिए जेसीबी जैसे बड़े उपकरणों की जरूरत पड़ती है। अब इतनी भारी मात्रा में विशेष उपकरणों का इस्तेमाल पाकिस्तानी आर्मी और पाकिस्तान रेंजर की मिली भगत के बिना नहीं हो सकता है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने मांग की है कि केन्द्र की मोदी सरकार सीमा पार से भारत में हो रहें घुसपैठ को तुरन्त बन्द करे।

शेष पृष्ठ 1 का
सुरंग के रास्ते घुसपैठ में कामयाब.....

शरण हुए मुझे आप शिक्षा दीजिये। अर्जुन के शोक एवं मोह को नष्ट करने के लिये भगवान ने आत्मा की अजरता, अमरता, नित्यता तथा शरीर की नश्वरता का विशद वर्णन किया है–

न जायते म्रियते .... हन्यमाने शरीरे।।

आत्मतत्त्व बताकर फिर स्वधर्म (क्षत्रिय धर्म) पालन करने से श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करने का उल्लेख किया। युद्ध करना तेरे लिये सब प्रकार से अच्छा है क्योंकि या तो मर कर स्वर्ग को प्राप्त होगा अथवा जीतकर पृथ्वी को भोगेगा, इससे हे अर्जुन युद्ध के लिये निश्चय वाला होकर खड़ा हो। इसके पश्चात तत्त्वज्ञान को दृढ़ करने के लिये सारभूत निष्काम कर्मयोग का सुन्दर उपदेश दिया। कर्मण्येवाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन। जीवों का कर्म करने में अधिकार है फल में नहीं। समत्वं योग उच्यते अथवा योगः कर्मसुकौशलं कर्म करने में कुशलता ही योग है। आदि गूढ़ तत्त्वों को समझाते हुए अर्जन को कर्म में प्रवृत्त करने की बात की। परम कृपा करके अपना विराट स्वरूप भी दिखाया। निष्काम कर्म, भक्तियोग, ज्ञानयोग आदि की विशद चर्चा करके अर्जुन को मन, वचन एवं कर्म से भगवान की शरण ग्रहण करने के लिये प्रेरित किया।

त्वमेव शरणं गच्छ..........प्राप्स्यसि शाश्वतम्।

हे भारत! सब प्रकार से उस परमेश्वर की अनन्य शरण को प्राप्त हो, उस परमात्मा की कृपा से ही परम शान्ति और सनातन परमधाम प्राप्त होगा। अर्जुन ने भगवान के सदुपदेश को मन लगाकर श्रवण किया और गद गद हो गया। भगवान के श्रीमुख से इस प्रकार का दिव्य रसमय तत्त्वोपदेश सुनकर अर्जुन को अनूठा अनुभव प्राप्त हुआ। हमें भी मोहादि नाना प्रकार के विकारों से छुटकारा पाने के लिये श्रद्धापूर्वक श्रीगीतोपदेश को जीवन में धारण करने की आवश्यकता है। भगवान की मंगलमयी कृपा से हमें अर्जुन के समान लाभ प्राप्त होगा और हम अखंड सुख एवं शाश्वत शान्ति के भागी बनेंगे। वर्तमान समय में भौतिकवाद का प्राबल्य है। धर्म की अवलेहना के फलस्वरूप चारों ओर भय–भ्रम, अविश्वास, असन्तोष तथा अनैतिकता का वातावरण छाया हुआ है। इस भयंकर स्थिति से छुटकारा पाने के लिये और सच्चे सुखमय निमग्न होने के लिये हमें गीता की शरण में आने का पवित्र संकल्प करना चाहिये। संजय के कथनानुसार हम अपने जीवन को आनन्दमय बनाने का सुप्रयास करें।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..150/- रुपये
द्विवार्षिक...300/- रुपये
आजीवन सदस्य...1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

वीर उधमसिंह बलिदान दिवस 13 जून पर विशेष

शहीद उधम सिंह का जीवन परिचय

भारत की आजादी की लड़ाई में पंजाब के प्रमुख क्रान्तिकारी सरदार उधम सिंह का नाम अमर है। आम धारणा है कि उन्होने जालियाँवाला बाग हत्याकांड के उत्तरदायी जनरल डायर को लन्दन में जाकर गोली मारी और निर्दोष लोगों की हत्या का बदला लिया, लेकिन **कुछ इतिहासकारों** का मानना है कि उन्होंने माइकल ओडवायर को मारा था, जो जलियांवाला **बाग** कांड के समय पंजाब के गर्वनर थे। ओडवायर जहां उधम सिंह की गोली से मरा, वहीं जनरल डायर कई तरह की बीमारियों से ग्रसित होकर मरा।

जीवन वृत्त : उधम सिंह का जन्म २६ दिसंबर १८९९ को पंजाब के संगरूर जिले के सुनाम गाँव में हुआ था। सन १९०१ में उधमसिंह की माता और १९०७ में उनके पिता का निधन हो गया। इस घटना के चलते उन्हें अपने बड़े भाई के साथ अमृतसर के एक अनाथालय में शरण लेनी पड़ी। उधमसिंह का बचपन का नाम शेर सिंह और उनके भाई का नाम मुक्तासिंह था जिन्हें अनाथालय में क्रमशः उधमसिंह और साधुसिंह के रूप में नए नाम मिले। इतिहासकार मालती मलिक के अनुसार उधमसिंह देश में सर्वधर्म समभाव के प्रतीक थे और इसीलिए उन्होंने अपना नाम बदलकर राम मोहम्मद आजाद सिंह रख लिया था जो भारत के तीन प्रमुख धर्मों का प्रतीक है। अनाथालय में उधमसिंह की जिन्दगी चल ही रही थी कि १९१७ में उनके बड़े भाई का भी देहांत हो गया। वह पूरी तरह अनाथ हो गए। १९१९ में उन्होंने अनाथालय छोड़ दिया और क्रांतिकारियों के साथ मिलकर आजादी की लड़ाई में शमिल हो गए। उधमसिंह अनाथ हो गए थे, लेकिन इसके बावजूद वह विचलित नहीं हुए और देश की आजादी तथा डायर को मारने की अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए लगातार काम करते रहे।

जनरल डायर की गोली मारकर हत्या : उधमसिंह १३ अप्रैल १९१९ को घटित जालियाँवाला बाग नरसंहार के प्रत्यक्षदर्शी थे। राजनीतिक कारणों से जलियाँवाला बाग में मारे गए लोगों की सही संख्या कभी सामने नहीं आ पाई। इस घटना से वीर उधमसिंह तिलमिला गए और उन्होंने जलियाँवाला बाग की मिट्टी हाथ में लेकर माइकल ओ डायर को सबक सिखाने की प्रतिज्ञा ले ली। अपने मिशन को अंजाम देने के लिए उधम सिंह ने विभिन्न नामों से अफ्रीका, नैरोबी, ब्राजील और अमेरिका की यात्रा की। सन् १९३४ में उधम सिंह लंदन पहुंचे और वहां ९ एल्डर स्ट्रीट कमर्शियल रोड पर रहने लगे। वहां उन्होंने यात्रा के उद्देश्य से एक कार खरीदी और साथ में अपना मिशन पूरा करने के लिए छह गोलियों वाली एक रिवाल्वर भी खरीद ली। भारत का यह वीर क्रांतिकारी माइकल ओ डायर को ठिकाने लगाने के लिए उचित वक्त का इंतजार करने लगा। उधम सिंह को अपने सैकड़ों भाई–बहनों की मौत का बदला लेने का मौका १९४० में मिला। जलियांवाला बाग हत्याकांड के २१ साल बाद १३ मार्च १९४० को रायल सेंट्रल एशियन सोसायटी की लंदन के काक्सटन हाल में बैठक थी जहां माइकल ओ डायर भी वक्ताओं में से एक था। उधम सिंह उस दिन समय से ही बैठक स्थल पर पहुंच गए। अपनी रिवाल्वर उन्होंने एक मोटी किताब में छिपा ली। इसके लिए उन्होंने किताब के पृष्ठों को रिवाल्वर के आकार में उस तरह से काट लिया था, जिससे डायर की जान लेने वाला हथियार आसानी से छिपाया जा सके। बैठक के बाद दीवार के पीछे से मोर्चा संभालते हुए उधम सिंह ने माइकल ओ डायर पर गोलियां दाग दीं। दो गोलियां माइकल ओ डायर को लगीं जिससे उसकी तत्काल मौत हो गई। उधमसिंह ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर दुनिया को संदेश दिया कि अत्याचारियों को भारतीय वीर कभी बख्शा नहीं करते। उधम सिंह ने वहां से भागने की कोशिश नहीं की और अपनी गिरफ्तारी दे दी। उन पर मुकदमा चला। अदालत में जब उनसे पूछा गया कि वह डायर के अन्य साथियों को भी मार सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा क्यों नहीं किया। उधम सिंह ने जवाब दिया कि वहां पर कई महिलाएं भी थीं और भारतीय संस्कृति में महिलाओं पर हमला करना पाप है। ४ जून, १९४० को उधम सिंह को हत्या का दोषी ठहराया गया और ३१ जुलाई १९४० को उन्हें पेंटनविले जेल में फांसी दे दी गई। इस तरह यह क्रांतिकारी भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में अमर हो गया। १९७४ में ब्रिटेन ने उनके अवशेष भारत को सौंप दिया।

कबिरा खड़ा बजार में

इतिहास से छेड़खानी बर्दाश्त नहीं

राजस्थान में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त अंग्रेजी माध्यम के निजी विद्यालयों में आठवीं कक्षा की किताब में बाल गंगाधर तिलक को आतंकवाद का जनक बताया जा रहा है। किताब की पेज संख्या २६७ पर १८–१९ वीं शताब्दी के राष्ट्रीय आंदोलन की घटनाएं शीर्षक से जुड़े पाठ में कहा गया है कि तिलक ने राष्ट्रीय आंदोलन में उग्र प्रदर्शन के पथ को अपनाया था और यही वजह है कि उन्हें आतंक का पितामह कहा जाता है। वह मानते थे कि अंग्रेजी हुकमरानों के सामने हाथ फैलाने और गिड़गिड़ाने से कुछ हासिल नहीं होगा। ऐसे में शिवाजी और गणपति उत्सव के सहारे तिलक ने देश में जागृति पैदा की। स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा, ऐसा क्रांतिकारी नारा देने वाले तिलक को क्या सोच कर आतंक का जनक कहा गया। यह तो लेखक ही जाने। लेकिन जब इस मामले पर विवाद खड़ा हुआ तो सफाई सामने आई है। प्रकाशक इसे अनुवाद की गलती बता रहे हैं तो राजस्थान के शिक्षा राज्यमंत्री वासुदेव देवनानी का कहना है कि यह मुख्य पाठ्य पुस्तक नहीं बल्कि संदर्भ पुस्तक है। वे यह भी कहते हैं कि तिलक का उद्देश्य अंग्रेजों के मन में आतंक का तात्पर्य मात्र भय उत्पन्न कर उन्हें देश से भगाना था। इस मुद्दे पर भाजपा के शीर्ष नेतृत्व से फिलहाल कोई सफाई, स्पष्टीकरण, खेद प्रकट सामने नहीं आया है। शायद इसलिए कि राजस्थान की राजनीति में तिलक से भाजपा को कोई लेना–देना न हो। वहां विधानसभा चुनाव तो होने हैं, उसके लिए जब रैलियां होंगी तो महाराणा प्रताप, अकबर, खिलजी, रानी पदिमनी आदि के इतिहास और उस पर खड़े विवाद से ही भाजपा का काम चल जाएगा। जब महाराष्ट्र में चुनाव होंगे तब बाल गंगाधर तिलक का इतिहास खंगाला जाएगा। हमारे इतिहासविद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने भाषणों से साबित कर देंगे कि तिलक महापुरूष थे, लेकिन दूसरी सरकारों ने उनके साथ न्याय नहीं किया। वे चाहें तो यह भी कह दें कि तिलक को लोकमान्य की उपाधि भाजपा शासन में ही हासिल हुई है। कहने का आशय यह कि राजनीतिक फायदे के लिए इतिहास के साथ छेड़छाड़ और तथ्यों को गलत तरीके से प्रस्तुत करने की एक परिपाटी सी चल पड़ी है और जनता उसे सामान्य भाव से स्वीकार रही है, यह बेहद खतरनाक है। इतिहास का मतलब अतीतजीवी होना नहीं है, बल्कि उसे देखकर भविष्य की नींव गढ़ने की तैयारी की जाती है। लेकिन जब हम इतिहास में अपना स्वार्थ, अपनी मर्जी चलाएंगे तो तय मानिए अपने भविष्य के लिए नींव नहीं कब्र खोदेंगे। वैसे भी भारत में इतिहास को सही–सही जानने की दिलचस्पी बहुत कम लोगों में रह गई है, जिसका फायदा उठाकर सोशल मीडिया पर भ्रामक जानकारियां फैलाई जाती हैं। हम शोध से ज्यादा सुनी–सुनाई बात पर भरोसा करते हैं और बात अगर प्रधानमंत्री कद का कोई आदमी कहे तो उसे पत्थर की लकीर भी मान लेते हैं। प्रधानमंत्री ने अपनी चुनावी सभाओं में कई बार इतिहास का गलत वर्णन किया है। ऐसा करके उन्हें शायद राजनीतिक फायदा मिलता होगा, लेकिन देश का नुकसान ही होता है। इतिहास की अगर कोई बात आपको पसंद नहीं है, तो भी आप उसे बदल नहीं सकते हैं। लेकिन खेद है कि इस वक्त यह खतरनाक खेल खेला जा रहा है।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि. सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 13 जून से 19 जून 2018 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।